رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ عَزِيۡزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِيۡصٌ عَلَيۡكُمۡ

लाए तुम में से वोह रसूल[307] जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले

بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ حَسۡبِىَ اللّٰهُ ۖ

मुसल्मानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान[308] फिर अगर वोह मुंह फेरें[309] तो तुम फ़रमा दो कि मुझे **अल्लाह** काफ़ी है

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَهُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ ﴿١٢٩﴾ ع

उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है[310]

اياتها ١٠٩ ﴿١٠ سُوۡرَةُ يُوۡنُسَ مَكِّيَّةٌ ٥١﴾ ركوعاتها ١١

सूरए यूनुस मक्किय्या है इस में एक सो नव आयतें और ग्यारह रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

الٓرٰ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡحَكِيۡمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنۡ اَوۡحَيۡنَاۤ

येह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं क्या लोगों को इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि हम ने उन में से

اِلٰى رَجُلٍ مِّنۡهُمۡ اَنۡ اَنۡذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنَّ لَهُمۡ

एक मर्द को वह्‌य भेजी कि लोगों को डर सुनाओ[2] और ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी दो कि उन के लिये

قَدَمَ صِدۡقٍ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ؕؔ قَالَ الۡكٰفِرُوۡنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿٢﴾

उन के रब के पास सच का मक़ाम है काफ़िर बोले बेशक येह तो खुला जादूगर है[3]

307 : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अ़रबी क़ुरशी जिन के ह़सब व नसब को तुम ख़ूब पहचानते हो कि तुम में सब से आ़ली नसब हैं और तुम उन के सिदक़ो अमानत, ज़ोहदो तक़्वा, त़हारतो तक़द्दुस और अख़्लाक़े ह़मीदा को भी ख़ूब जानते हो और एक क़िराअत में ''اَنۡفَسِكُمۡ'' ब फ़त्ह़ ''فا'' आया है, इस के मा'ना हैं कि तुम में सब से नफ़ीस तर और अशरफ़ो अफ़्ज़ल । इस आयते करीमा में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी या'नी आप के मीलादे मुबारक का बयान है । तिरमिज़ी की ह़दीस से भी साबित है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी पैदाइश का बयान क़ियाम कर के फ़रमाया । **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मह़फ़िले मीलादे मुबारक की अस्ल क़ुरआनो ह़दीस से साबित है । **308 :** इस आयत में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपने दो नामों से मुशर्रफ़ फ़रमाया, येह कमाले तक्रीम है इस सरवरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की **309 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार आप पर ईमान लाने से ए'राज़ करें **310 :** ह़ाकिम ने मुस्तदरक में उबय इब्ने का'ब से एक ह़दीस रिवायत की है कि ''لَقَدۡ جَآءَكُمۡ'' से आख़िर सूरत तक दोनों आयतें क़ुरआने करीम में सब के बा'द नाज़िल हुईं । **1 :** सूरए यूनुस मक्किय्या है सिवाए तीन आयतों के ''فَاِنۡ كُنۡتَ فِىۡ شَكٍّ'' से । इस में ग्यारह रुकूअ़ और एक सो नव आयतें और एक हज़ार आठ सो बत्तीस कलिमे और नव हज़ार निनानवे ह़र्फ़ हैं । **2 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ عَنۡهُمَا ने फ़रमाया जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को रिसालत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और आप ने इस का इज़्हार किया तो अ़रब मुन्किर हो गए और उन में से बा'ज़ों ने येह कहा कि **अल्लाह** इस से बरतर है कि किसी बशर को रसूल बनाए । इस पर येह आयात नाज़िल हुईं । **3 :** कुफ़्फ़ार ने पहले तो बशर का रसूल होना क़ाबिले तअ़ज्जुब व इन्कार क़रार दिया और फिर जब ह़ुज़ूर के मो'जिज़ात

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मान और ज़मीन छ[6] दिन में बनाए फिर

اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِیْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ

अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है काम की तदबीर फ़रमाता है[4] कोई सिफ़ारिशी नहीं मगर उस की इजाज़त

اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝۳ اِلَیْهِ

के बा'द[5] येह है अल्लाह तुम्हारा रब[6] तो उस की बन्दगी करो तो क्या तुम ध्यान नहीं करते उसी की त़रफ़

مَرْجِعُكُمْ جَمِیْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ یَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗ

तुम सब को फिरना है[7] अल्लाह का सच्चा वा'दा बेशक वोह पहली बार बनाता है फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाएगा

لِیَجْزِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِیْنَ

कि उन को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये इन्साफ़ का सिला दे[8] और काफ़िरों

كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِیْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِیْمٌۢ بِمَا كَانُوْا یَكْفُرُوْنَ ۝۴ هُوَ

के लिये पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब बदला उन के कुफ़्र का वोही

الَّذِیْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِیَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا

है जिस ने सूरज को जगमगाता बनाया और चांद चमक्ता और इस के लिये मन्ज़िलें ठहराई[9] कि तुम

عَدَدَ السِّنِیْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ یُفَصِّلُ

बरसों की गिनती और[10] हिसाब जानो अल्लाह ने इसे न बनाया मगर हक़[11] निशानियां

देखे और यक़ीन हुवा कि येह बशर के मक़्दिरत (इन्सान की ताक़त) से बालातर हैं तो आप को साहिर (जादूगर) बताया, उन का येह दा'वा तो किज़्ब व बातिल है मगर इस में भी हुज़ूर के कमाल और अपने इज्ज़ का ए'तिराफ़ पाया जाता है। **4 :** या'नी तमाम ख़ल्क़ के उमूर का हस्बे इक़्तिज़ाए हिक्मत सर अन्जाम फ़रमाता है। **5 :** इस में बुत परस्तों के इस क़ौल का रद है कि बुत उन की शफ़ाअ़त करेंगे, उन्हें बताया गया कि "शफ़ाअ़त" माज़ूनीन (इजाज़त याफ़्ता) के सिवा कोई नहीं करेगा और माज़ून सिर्फ़ उस के मक़्बूल बन्दे होंगे। **6 :** जो आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ और तमाम उमूर का मुदब्बिर है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं फ़क़त वोही मुस्तहिक़े इबादत है। **7 :** रोज़े क़ियामत और येही है **8 :** इस आयत में ह़श्रो नश्र व मआ़द का बयान और मुन्किरीन का रद है और इस पर निहायत लत़ीफ़ पैराए में दलील क़ाइम फ़रमाई गई है कि वोह पहली बार बनाता है और आ'ज़ाए मुरक्कबा को पैदा करता है और तरकीब देता है तो मौत के साथ मुतफ़र्रिक़ व मुन्तशिर होने के बा'द उन को दोबारा फिर तरकीब देना और बने हुए इन्सान को फ़ना के बा'द फिर दोबारा बना देना और वोही जान जो उस के बदन से मुतअ़ल्लिक़ थी उस को उस बदन की दुरुस्ती के बा'द फिर उसी बदन से मुतअ़ल्लिक़ कर देना उस की क़ुदरत से क्या बईद है और इस दोबारा पैदा करने का मक़्सूद जज़ाए आ'माल या'नी मुत़ीअ़ को सवाब और आ़सी (ना फ़रमान) को अ़ज़ाब देना है। **9 :** अठ्ठाईस मन्ज़िलें जो बारह बुर्जों पर मुन्क़सिम हैं हर बुर्ज के लिये $2\frac{1}{3}$ मन्ज़िलें हैं, चांद हर शब एक मन्ज़िल में रहता है और महीना तीस दिन का हो तो दो शब, वरना एक शब छुपता है। **10 :** महीनों, दिनों, साअ़तों का **11 :** कि इस से उस की क़ुदरत और उस की वह़दानिय्यत के दलाइल ज़ाहिर हों।

www.dawateislami.net

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ

मुफ़स्सल बयान फ़रमाता है इ़ल्म वालों के लिये[12] बेशक रात और दिन का बदलता आना और जो कुछ

اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا

अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन में पैदा किया उन में निशानियां हैं डर वालों के लिये बेशक वोह जो

يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ

हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते[13] और दुन्या की ज़िन्दगी पसन्द कर बैठे और इस पर मुत्मइन हो गए[14] और वोह जो

عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٧ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨

हमारी आयतों से ग़फ़्लत करते हैं[15] उन लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है बदला उन की कमाई का

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ

बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन का रब उन के ईमान के सबब उन्हें राह देगा[16]

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٩ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا

उन के नीचे नहरें बहती होंगी ने'मत के बाग़ों में उन की दुआ उस में येह होगी कि

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ

अल्लाह तुझे पाकी है[17] और उन के मिलते वक़्त ख़ुशी का पहला बोल सलाम है[18] और उन की दुआ का ख़ातिमा येह है कि सब ख़ूबियों सराहा (ख़ूबियों वाला)

لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ ع وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ ع ١٢

अल्लाह जो रब है सारे जहान का[19] और अगर अल्लाह लोगों पर बुराई ऐसी जल्द भेजता जैसी वोह भलाई की

12 : कि इन में ग़ौर कर के नफ़्अ़ उठाएं। 13 : रोज़े क़ियामत और सवाब व अ़ज़ाब के क़ाइल नहीं। 14 : और इस फ़ानी (दुन्या) को जाविदानी (हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत) पर तरजीह़ दी और उ़म्र इस की त़लब में गुज़ारी। 15 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि यहां आयात से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ाते पाक और क़ुरआन शरीफ़ मुराद है और ग़फ़्लत करने से मुराद इन से ए'राज़ करना है। 16 : जन्नतों की त़रफ़। क़तादा का क़ौल है कि मोमिन जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस का अ़मल ख़ूब सूरत शक्ल में उस के सामने आएगा। येह शख़्स कहेगा : तू कौन है? वोह कहेगा : मैं तेरा अ़मल हूं और उस के लिये नूर होगा और जन्नत तक पहुंचाएगा और काफ़िर का मुआ़मला बर अ़क्स होगा कि उस का अ़मल बुरी शक्ल में नुमूदार हो कर उसे जहन्नम पहुंचाएगा। 17 : या'नी अहले जन्नत अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़, तह़मीद, तक़्दीस में मश्ग़ूल रहेंगे और उस के ज़िक्र से उन्हें फ़रह़त व सुरूर और इन्तिहा दरजे की लज़्ज़त ह़ासिल होगी, سُبْحٰنَ اللّٰہ। 18 : या'नी अहले जन्नत आपस में एक दूसरे की तह़िय्यत व तक्रीम (ता'ज़ीम) सलाम से करेंगे या मलाएका उन्हें बत़ौरे तह़िय्यत सलाम अ़र्ज़ करेंगे या मलाएका रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन के पास सलाम लाएंगे। 19 : उन के कलाम की इब्तिदा अल्लाह की ता'ज़ीम व तन्ज़ीह (पाकी) से होगी और कलाम का इख़्तिताम उस की ह़म्दो सना पर होगा।

www.dawateislami.net

بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا

जल्दी करते हैं तो उन का वा'दा पूरा हो चुका होता[20] तो हम छोड़ते उन्हें जो हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते

فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ

कि अपनी सरकशी में भटका करें[21] और जब आदमी को[22] तक्लीफ़ पहुंचती है हमें पुकारता है लैटे और

قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى

बैठे और खड़े[23] फिर जब हम उस की तक्लीफ़ दूर कर देते हैं चल देता है[24] गोया कभी किसी तक्लीफ़ के

ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ لَقَدْ

पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था यूंही भले कर दिखाए हैं ह़द से बढ़ने वालों को[25] उन के काम[26] और बेशक

اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

हम ने तुम से पहली संगतें[27] हलाक फ़रमा दीं जब वोह ह़द से बढ़े[28] और उन के रसूल उन के पास

بِالْبَيِّنٰتِ وَ مَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۳﴾

रोशन दलीलें ले कर आए[29] और वोह ऐसे थे ही नहीं कि ईमान लाते हम यूंही बदला देते हैं मुजरिमों को

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾

फिर हम ने उन के बा'द तुम्हें ज़मीन में जा नशीन किया कि देखें तुम कैसे काम करते हो[30]

20 : या'नी अगर **अल्लाह** तआला लोगों की बद दुआएं जैसे कि वोह ग़ज़ब के वक़्त अपने लिये और अपने अहल व औलाद व माल के लिये करते हैं और कहते हैं हम हलाक हो जाएं, ख़ुदा हमें ग़ारत करे, बरबाद करे और ऐसे कलिमे ही अपनी औलाद व अक़ारिब के लिये कह गुज़रते हैं जिसे हिन्दी में कोसना कहते हैं अगर वोह दुआ ऐसी जल्दी क़बूल कर ली जाती जैसी जल्दी वोह दुआए ख़ैर के क़बूल होने में चाहते हैं तो उन लोगों का ख़ातिमा हो चुका होता और वोह कब के हलाक हो गए होते लेकिन **अल्लाह** तबारक व तआला अपने करम से दुआए ख़ैर क़बूल फ़रमाने में जल्दी करता है, दुआए बद के क़बूल में नहीं, येह उस की रह़मत है। **शाने नुज़ूल :** नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा था : या रब ! येह दीने इस्लाम अगर तेरे नज़्दीक ह़क़ है तो हमारे ऊपर आस्मान से पथ्थर बरसा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि अगर **अल्लाह** तआला काफ़िरों के लिये अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाता जैसा कि उन के लिये माल व औलाद वग़ैरा दुन्या की भलाई देने में जल्दी फ़रमाई तो वोह सब हलाक हो चुके होते। **21 :** और हम उन्हें मोहलत देते हैं और उन के अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाते। **22 :** यहां आदमी से काफ़िर मुराद है। **23 :** हर ह़ाल में और जब तक उस की तक्लीफ़ ज़ाइल न हो दुआ में मश्ग़ूल रहता है। **24 :** अपने पहले त़रीक़े पर और वोही कुफ़्र की राह इख़्तियार करता है और तक्लीफ़ के वक़्त को भूल जाता है। **25 :** या'नी काफ़िरों को **26 :** मक़्सद येह है कि इन्सान बला के वक़्त बहुत ही बे सब्रा है और राह़त के वक़्त निहायत नाशुक्रा, जब तक्लीफ़ पहुंचती है तो खड़े, लैटे, बैठे हर ह़ाल में दुआ करता है, जब **अल्लाह** तक्लीफ़ दूर कर दे तो शुक्र बजा नहीं लाता और अपनी ह़ालते साबिक़ा की त़रफ़ लौट जाता है, येह ह़ाल ग़ाफ़िल का है, मोमिने आ़क़िल का ह़ाल इस के ख़िलाफ़ है, वोह मुसीबत व बला पर सब्र करता है, राह़तो आसाइश में शुक्र करता है, तक्लीफ़ व राह़त के जुम्ला अह़वाल में **अल्लाह** तआला के ह़ुज़ूर तज़र्रोअ़ (गिर्या) व ज़ारी और दुआ करता है और एक मक़ाम इस से भी आ'ला है जो मोमिनों में भी मख़्सूस बन्दों को ह़ासिल है कि जब कोई मुसीबत व बला आती है उस पर सब्र करते हैं, क़ज़ाए इलाही पर दिल से राज़ी रहते हैं और जमीअ़ अह़वाल पर शुक्र करते हैं। **27 :** या'नी उम्मतें **28 :** और कुफ़्र में मुब्तला हुए। **29 :** जो उन के सिद्क़ की बहुत वाज़ेह़ दलीलें थीं लेकिन उन्हों ने न माना और अम्बिया की तस्दीक़ न की। **30 :** ताकि तुम्हारे साथ तुम्हारे अ़मल के लाइक़ मुआ़मला

www.dawateislami.net

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا

और जब उन पर हमारी रोशन आयतें[31] पढ़ी जाती हैं वोह कहने लगते हैं जिन्हें हम से मिलने की उम्मीद नहीं[32] कि

ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَاۤ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْۤ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ

इस के सिवा और क़ुरआन ले आइये[33] या इसी को बदल दीजिये[34] तुम फ़रमाओ मुझे नहीं पहुंचता कि मैं इसे अपनी तरफ़

تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ

से बदल दूं मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं जो मेरी तरफ़ वह्य होती है[35] मैं अगर अपने रब की ना फ़रमानी करूं[36]

رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَ لَاۤ

तो मुझे बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है[37] तुम फ़रमाओ अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसे तुम पर न पढ़ता न वोह

اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶﴾

तुम को इस से ख़बरदार करता[38] तो मैं इस से पहले तुम में अपनी एक उ़म्र गुज़ार चुका हूं[39] तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[40]

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[41] या उस की आयतें झुटलाए बेशक

يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَ لَا

मुजरिमों का भला न होगा और अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़[42] को पूजते हैं जो उन का न कुछ नुक़्सान करे और न

फ़रमाएं **31 :** जिन में हमारी तौ़हीद और बुत परस्ती की बुराई और बुत परस्तों की सज़ा का बयान है। **32 :** और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। **33 :** जिस में बुतों की बुराई न हो। **34 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आप पर ईमान ले आएं तो आप इस क़ुरआन के सिवा दूसरा क़ुरआन लाइये ! जिस में लात व उ़ज़्ज़ा व मनात वग़ैरा बुतों की बुराई और इन की इबादत छोड़ने का हुक्म न हो और अगर अल्लाह ऐसा क़ुरआन नाज़िल न करे तो आप अपनी तरफ़ से बना लीजिये या इसी क़ुरआन को बदल कर हमारी मरज़ी के मुताबिक़ कर दीजिये तो हम ईमान ले आएंगे। उन का येह कलाम या तो ब तरीक़े तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा था या उन्हों ने तजरिबा व इम्तिहान के लिये ऐसा कहा था कि अगर येह दूसरा क़ुरआन बना लाएं या इस को बदल दें तो साबित हो जाएगा कि क़ुरआन कलामे रब्बानी नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुक्म दिया कि इस का येह जवाब दें जो आयत में मज़्कूर होता है **: 35 :** मैं इस में कोई तग़यीर व तब्दील कमी बेशी नहीं कर सकता, येह मेरा कलाम नहीं कलामे इलाही है। **36 :** या उस की किताब के अह़काम को बदलूं **37 :** और दूसरा क़ुरआन बनाना इन्सान की मक़्दिरत (ताक़त) ही से बाहर है और ख़ल्क़ का इस से आ़जिज़ होना ख़ूब ज़ाहिर हो चुका। **38 :** या'नी इस की तिलावत महज़ अल्लाह की मरज़ी से है। **39 :** और चालीस साल तुम में रहा हूं, इस ज़माने में मैं तुम्हारे पास कुछ नहीं लाया और मैं ने तुम्हें कुछ नहीं सुनाया तुम ने मेरे अह़वाल का ख़ूब मुशाहदा किया है, मैं ने किसी से एक ह़र्फ़ नहीं पढ़ा, किसी किताब का मुत़ालआ़ न किया, इस के बा'द येह किताबे अ़ज़ीम लाया जिस के हुज़ूर हर एक कलामे फ़सीह़ पस्त और बे ह़क़ीक़त हो गया, इस किताब में नफ़ीस उ़लूम हैं, उसूल व फ़ुरूअ़ का बयान है, अह़काम व आदाब हैं, मकारिमे अख़्लाक़ की ता'लीम है, ग़ैबी ख़बरें हैं, इस की फ़साह़तो बलाग़त ने मुल्क भर के फ़ुसह़ा व बुलग़ा को आ़जिज़ कर दिया है, हर साह़िबे अ़क़्ले सलीम के लिये येह बात अज़्हर मिनश्शम्स (सूरज से ज़ियादा रोशन) हो गई है कि येह बिग़ैर वह्ये इलाही के मुम्किन ही नहीं। **40 :** कि इतना समझ सको कि येह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से है मख़्लूक़ की क़ुदरत में नहीं कि इस की मिस्ल बना सके **41 :** उस के लिये शरीक बताए **42 :** बुत।

www.dawateislami.net

يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ

कुछ भला और कहते हैं कि येह अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं[43] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह को वोह बात जताते हो

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

जो उस के इ़ल्म में न आस्मानों में है न ज़मीन में[44] उसे पाकी और बरतरी है उन के

يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا

शिर्क से और लोग एक ही उम्मत थे[45] फिर मुख़्तलिफ़ हुए और अगर तेरे

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾

रब की त़रफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती[46] तो यहीं उन के इख़्तिलाफ़ों का उन पर फ़ैसला हो गया होता[47]

وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ

और कहते हैं उन पर उन के रब की त़रफ़ से कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी[48] तुम फ़रमाओ ग़ैब तो अल्लाह के लिये है

43 : या'नी दुन्यवी उमूर में क्यूं कि आख़िरत और मरने के बा'द उठने का तो वोह ए'तिक़ाद ही नहीं रखते। **44 :** या'नी उस का वुजूद ही नहीं क्यूं कि जो चीज़ मौजूद है वोह ज़रूर इ़ल्मे इलाही में है। **45 :** एक दीने इस्लाम पर जैसा कि ज़मानए ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام में क़ाबील के हाबील को क़त्ल करने के वक़्त तक ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और उन की ज़ुर्रिय्यत एक ही दीन पर थे इस के बा'द उन में इख़्तिलाफ़ हुवा, और एक क़ौल येह है कि ज़मानए नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام तक एक दीन पर रहे फिर इख़्तिलाफ़ हुवा तो नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मब्ऊ़स फ़रमाए गए। एक क़ौल येह है कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कश्ती से उतरने के वक़्त सब लोग एक दीने इस्लाम पर थे। एक क़ौल येह है कि अ़हदे ह़ज़रते इब्राहीम से सब लोग एक दीन पर थे यहां तक कि अम्र बिन लुह़य्य ने दीन को मुतग़य्यर किया। इस तक़्दीर पर "النَّاسُ" से मुराद ख़ास अ़रब होंगे। एक क़ौल येह है कि लोग एक दीन पर थे या'नी कुफ़्र पर फिर अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया को भेजा तो बा'ज़ उन में से ईमान लाए और बा'ज़ उ़लमा ने कहा कि मा'ना येह हैं कि लोग अव्वले ख़िल्क़त में फ़ित्रते सलीमा पर थे फिर इन में इख़्तिलाफ़ात हुए। ह़दीस शरीफ़ में है हर बच्चा फ़ित्रत पर पैदा होता है फिर उस के मां बाप उस को यहूदी बनाते हैं या नसरानी बनाते हैं या मजूसी बनाते हैं और ह़दीस में फ़ित्रत से फ़ित्रते इस्लाम मुराद है। **46 :** और हर उम्मत के लिये एक मीआ़द मुअ़य्यन न कर दी गई होती या जज़ाए आ'माल क़ियामत तक मुअख़्ख़र न फ़रमाई गई होती **47 :** नुज़ूले अ़ज़ाब से। **48 :** अहले बातिल का त़रीक़ा है कि जब उन के ख़िलाफ़ बुरहाने क़वी क़ाइम होती है और वोह जवाब से आजिज़ हो जाते हैं तो उस बुरहान का ज़िक्र इस त़रह़ छोड़ देते हैं जैसे कि वोह पेश ही नहीं हुई और येह कहा करते हैं कि दलील लाओ ताकि सुनने वाले इस मुग़ालते में पड़ जाएं कि इन के मुक़ाबिल अब तक कोई दलील ही नहीं क़ाइम की गई है, इस त़रह़ कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर के मो'जिज़ात और बिल ख़ुसूस क़ुरआने करीम जो मो'जिज़ए अ़ज़ीमा है इस की त़रफ़ से आंखें बन्द कर के येह कहना शुरूअ़ किया कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी गोया कि मो'जिज़ात उन्हों ने देखे ही नहीं और क़ुरआने पाक को वोह निशानी शुमार ही नहीं करते। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया कि आप फ़रमा दीजिये कि ग़ैब तो अल्लाह के लिये है अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं। तक़रीर जवाब येह है कि दलालते क़ाहिरा (ज़बर दस्त दलील) इस पर क़ाइम है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर क़ुरआने पाक का ज़ाहिर होना बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा है क्यूं कि हुज़ूर उन में पैदा हुए, उन के दरमियान हुज़ूर बढ़े, तमाम ज़माने हुज़ूर के उन की आंखों के सामने गुज़रे, वोह ख़ूब जानते हैं कि आप ने न किसी किताब का मुत़ालआ़ किया, न किसी उस्ताद की शागिर्दी की, यकबारगी क़ुरआने करीम आप पर ज़ाहिर हुवा और ऐसी बे मिसाल आ'ला तरीन किताब का ऐसी शान के साथ नुज़ूल बिग़ैर वह़्य के मुम्किन ही नहीं, येह क़ुरआने करीम के मो'जिज़ए क़ाहिरा होने की बुरहान है और जब ऐसी क़वी बुरहान क़ाइम है तो इस्बाते नुबुव्वत के लिये किसी दूसरी निशानी का त़लब करना क़त़्अ़न ग़ैर ज़रूरी है, ऐसी ह़ालत में इस निशानी का नाज़िल करना न करना अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत पर है चाहे करे चाहे न करे तो येह अम्र ग़ैब हुवा और इस के लिये इन्तिज़ार लाज़िम आया कि अल्लाह क्या करता है। लेकिन वोह येह ग़ैर ज़रूरी निशानी जो कुफ़्फ़ार ने त़लब की है नाज़िल फ़रमाए या न फ़रमाए नुबुव्वत साबित हो चुकी और रिसालत का सुबूते क़ाहिरा मो'जिज़ात से कमाल को पहुंच चुका।

www.dawateislami.net

ع ٢ ١٠ ٧

فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ

अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं और जब हम आदमियों को रहमत का

رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ

मज़ा देते हैं किसी तक्लीफ़ के बा'द जो उन्हें पहुंची थी जभी वोह हमारी आयतों के साथ दाउं चलते हैं[49] तुम फ़रमा दो **अल्लाह** की ख़ुफ़्या तदबीर

اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ الَّذِيْ

सब से जल्द हो जाती है[50] बेशक हमारे फ़िरिश्ते तुम्हारे मक्र लिख रहे हैं[51] वोही है कि

يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ

तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है[52] यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो और वोह[53] अच्छी हवा

بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ

से उन्हें ले कर चलें और इस पर ख़ुश हुए[54] उन पर आंधी का झोंका आया और हर त़रफ़ लहरों

مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ

ने उन्हें आ लिया और समझ लिये कि हम घिर गए उस वक़्त **अल्लाह** को पुकारते हैं निरे (ख़ालिस) उस के

الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ

बन्दे हो कर कि अगर तू इस से हमें बचा लेगा तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ार होंगे[55] फिर **अल्लाह** जब

اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا

उन्हें बचा लेता है जभी वोह ज़मीन में नाहक़ ज़ियादती करने लगते हैं[56] ऐ लोगो

بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ

तुम्हारी ज़ियादती तुम्हारी ही जानों का वबाल है दुन्या के जीते जी बरत लो (फ़ाएदा उठा लो) फिर तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना है

49 : अहले मक्का पर **अल्लाह** तआ़ला ने क़ह़त़ मुसल्लत़ किया जिस की मुसीबत में वोह सात बरस गिरिफ़्तार रहे यहां तक कि क़रीब हलाकत के पहुंचे फिर उस ने रह़म फ़रमाया, बारिश हुई, ज़मीनें सर सब्ज़ हुईं तो अगर्चे इस तक्लीफ़ व राह़त दोनों में क़ुदरत की निशानियां थीं और तक्लीफ़ के बा'द राह़त बड़ी अ़ज़ीम ने'मत थी, इस पर शुक्र लाज़िम था मगर बजाए इस के वोह पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाले) न हुए और फ़साद व कुफ़्र की त़रफ़ पलटे **50 :** और उस का अ़ज़ाब देर नहीं करता **51 :** और तुम्हारी ख़ुफ़्या तदबीरें कातिबे आ'माल फ़िरिश्तों पर भी मख़्फ़ी नहीं हैं तो **अल्लाह** अ़लीम व ख़बीर से कैसे छुप सकती हैं। **52 :** और तुम्हें क़त़्ए मसाफ़त (रास्ता त़ै करने) की क़ुदरत देता है ख़ुश्की में तुम पियादा और सुवार मन्ज़िलें त़ै करते हो और दरियाओं में कश्तियों और जहाज़ों से सफ़र करते हो वोह तुम्हें ख़ुश्की और तरी दोनों में अस्बाबे सैर अ़त़ा फ़रमाता है। **53 :** या'नी कश्तियां **54 :** कि हवा मुवाफ़िक़ है अचानक **55 :** तेरी ने'मतों के, तुझ पर ईमान ला कर और ख़ास तेरी इ़बादत कर के। **56 :** और वा'दे के ख़िलाफ़ कर के कुफ़्र व मा'सियत में मुब्तला होते हैं।

www.dawateislami.net

فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ

उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतक (करतूत) थे[57] दुन्या की ज़िन्दगी की कहावत तो ऐसी ही है जैसे वोह पानी

اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ

कि हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन से उगने वाली चीज़ें घनी (ज़ियादा) हो कर निकलें जो कुछ आदमी और

وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ

चौपाए खाते हैं[58] यहां तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार ले लिया[59] और ख़ूब आरास्ता हो गई और उस के

اَهْلُهَاۤ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَاۤ ۙ اَتٰىهَاۤ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا

मालिक समझे कि येह हमारे बस में आ गई[60] हमारा हुक्म उस पर आया रात में या दिन में[61] तो हम ने उसे कर दिया

حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

काटी हुई गोया कल थी ही नहीं[62] हम यूंही आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं ग़ौर करने

يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاللّٰهُ يَدْعُوْۤا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ

वालों के लिये[63] और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ पुकारता है[64] और जिसे चाहे

يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ

सीधी राह चलाता है[65] भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद[66]

57 : और उन की तुम्हें जज़ा देंगे। **58 :** ग़ल्ले और फल और सब्ज़ा। **59 :** ख़ूब फूली फली सर सब्ज़ो शादाब हुई **60 :** कि खेतियां तय्यार हो गईं फल रसीदा (तय्यार) हो गए ऐसे वक़्त **61 :** या'नी अचानक हमारा अ़ज़ाब आया ख़्वाह बिजली गिरने की शक्ल में या ओले बरसने या आंधी चलने की सूरत में। **62 :** येह उन लोगों के हाल की एक तम्सील है जो दुन्या के शेफ़्ता (आशिक़) हैं और आख़िरत की उन्हें कुछ परवा नहीं। इस में बहुत दिल पज़ीर तरीक़े पर ख़ातिर गुज़ीं किया गया है कि दुन्यवी ज़िन्दगानी उम्मीदों का सब्ज़ बाग़ है इस में उ़म्र खो कर जब आदमी इस ग़ायत पर पहुंचता है जहां उस को हुसूले मुराद का इत्मीनान हो और वोह काम्याबी के नशे में मस्त हो अचानक उस को मौत पहुंचती है और वोह तमाम ने'मतों और लज़्ज़तों से महरूम हो जाता है। क़तादा ने कहा कि दुन्या का तलब गार जब बिल्कुल बे फ़िक्र होता है उस वक़्त उस पर अ़ज़ाबे इलाही आता है और उस का तमाम सरो सामान जिस से उस की उम्मीदें वाबस्ता थीं ग़ारत हो जाता है। **63 :** ताकि वोह नफ़्अ़ हासिल करें और ज़ुल्माते शुकूको अवहाम से नजात पाएं और दुन्याए ना पाएदार की बे सबाती (ना पाएदारी) से बा ख़बर हों। **64 :** दुन्या की बे सबाती बयान फ़रमाने के बा'द दारे बाक़ी (हमेशा रहने वाले घर जन्नत) की तरफ़ दा'वत दी। क़तादा ने कहा कि दारुस्सलाम जन्नत है, येह अल्लाह का कमाले रहमतो करम है कि अपने बन्दों को जन्नत की दा'वत दी। **65 :** सीधी राह दीने इस्लाम है। बुख़ारी की ह़दीस में है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में फ़िरिश्ते हाज़िर हुए, आप ख़्वाब में थे, उन में से बा'ज़ ने कहा कि आप ख़्वाब में हैं और बा'ज़ों ने कहा कि आंखें ख़्वाब में हैं दिल बेदार है। बा'ज़ कहने लगे कि इन की कोई मिसाल बयान करो तो उन्हों ने कहा : जिस तरह किसी शख़्स ने एक मकान बनाया और उस में तरह तरह की ने'मतें मुहय्या कीं और एक बुलाने वाले को भेजा कि लोगों को बुलाए, जिस ने उस बुलाने वाले की इताअ़त की उस मकान में दाख़िल हुवा और उन ने'मतों को खाया पिया और जिस ने बुलाने वाले की इताअ़त न की वोह न मकान में दाख़िल हो सका न कुछ खा सका, फिर वोह कहने लगे कि इस मिसाल की तत्बीक़ करो कि समझ में आए। तत्बीक़ येह है कि मकान जन्नत है दाई मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हैं जिस ने इन की इताअ़त की उस ने अल्लाह की इताअ़त की जिस ने इन की ना फ़रमानी की उस ने अल्लाह की ना फ़रमानी की। **66 :** भलाई वालों से अल्लाह के फ़रमां बरदार बन्दे मोमिनीन मुराद हैं और येह जो

www.dawateislami.net

وَ لَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّ لَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ

और उन के मुंह पर न चढ़ेगी सियाही और न ख़्वारी[67] वोही जन्नत वाले हैं वोह

فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ الَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۭ بِمِثْلِهَا ۙ۬ وَ

उस में हमेशा रहेंगे और जिन्हों ने बुराइयां कमाईं[68] तो बुराई का बदला उसी जैसा[69] और

تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَاۤ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ

उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा गोया उन के चेहरों पर अंधेरी

قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷﴾

रात के टुकड़े चढ़ा दिये हैं[70] वोही दोज़ख़ वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे

وَ يَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ

और जिस दिन हम उन सब को उठाएंगे[71] फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे अपनी जगह रहो तुम

وَ شُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَ قَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا

और तुम्हारे शरीक[72] तो हम उन्हें मुसल्मानों से जुदा कर देंगे और उन के शरीक उन से कहेंगे तुम हमें

تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ

कब पूजते थे[73] तो अल्लाह गवाह काफ़ी है हम में और तुम में कि हमें

عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿۲۹﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّاۤ اَسْلَفَتْ وَ رُدُّوْۤا

तुम्हारे पूजने की ख़बर भी न थी यहां हर जान जांच लेगी जो आगे भेजा[74] और अल्लाह की तरफ़

फ़रमाया कि उन के लिये भलाई है। इस भलाई से जन्नत मुराद है और ज़ियादत इस पर दीदारे इलाही है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बा'द अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा क्या तुम चाहते हो कि तुम पर और ज़ियादा इनायत करूं वोह अ़र्ज़ करेंगे या रब ! क्या तू ने हमारे चेहरे सफ़ेद नहीं किये, क्या तू ने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया, क्या तू ने हमें दोज़ख़ से नजात नहीं दी। हुज़ूर ने फ़रमाया : फिर पर्दा उठा दिया जाएगा तो दीदारे इलाही उन्हें हर ने'मत से ज़ियादा प्यारा होगा। सिहाह़ की बहुत हदीसें येह साबित करती हैं कि ज़ियादत से आयत में दीदारे इलाही मुराद है। 67 : कि येह बात जहन्नम वालों के लिये है। 68 : या'नी कुफ़्र व मआ़सी में मुब्तला हुए। 69 : ऐसा नहीं कि जैसे नेकियों का सवाब दस गुना और सात सो गुना किया जाता है ऐसे ही बदियों का अ़ज़ाब भी बढ़ा दिया जाए बल्कि जितनी बदी होगी उतना ही अ़ज़ाब किया जाएगा। 70 : येह ह़ाल होगा उन की रू सियाही का, ख़ुदा की पनाह। 71 : और तमाम ख़ल्क़ को मौक़िफ़े ह़िसाब में जम्अ़ करेंगे 72 : या'नी वोह बुत जिन को तुम पूजते थे। 73 : रोज़े क़ियामत एक साअ़त ऐसी शिद्दत की होगी कि बुत अपने पुजारियों के पूजा का इन्कार कर देंगे और अल्लाह की क़सम खा कर कहेंगे कि हम न सुनते थे, न देखते थे, न जानते थे, न समझते थे कि तुम हमें पूजते हो, इस पर बुत परस्त कहेंगे कि अल्लाह की क़सम ! हम तुम्हीं को पूजते थे तो बुत कहेंगे : 74 : या'नी इस मौक़िफ़ में सब को मा'लूम हो जाएगा कि इन्हों ने पहले जो अ़मल किये थे वोह कैसे थे अच्छे या बुरे मुज़िर या मुफ़ीद।

www.dawateislami.net

إِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۳۰﴾ قُلْ مَنْ

फेरे जाएंगे जो उन का सच्चा मौला है और उन की सारी बनावटें[75] उन से गुम हो जाएंगी[76] तुम फ़रमाओ तुम्हें

يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَ

कौन रोज़ी देता है आस्मान और ज़मीन से[77] या कौन मालिक है कान और आंखों का[78] और

مَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ

कौन निकालता है ज़िन्दा को मुर्दे से और निकालता है मुर्दा को ज़िन्दे से[79] और कौन तमाम कामों की

الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ

तदबीर करता है तो अब कहेंगे कि **अल्लाह**[80] तो तुम फ़रमाओ तो क्यूं नहीं डरते[81] तो येह **अल्लाह** है

رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۖۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿۳۲﴾

तुम्हारा सच्चा रब[82] फिर हक़ के बा'द क्या है मगर गुमराही[83] फिर कहां फिरे जाते हो

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْۤا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۳﴾

यूंही साबित हो चुकी है तेरे रब की बात फ़ासिक़ों पर[84] तो वोह ईमान नहीं लाएंगे

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ

तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में[85] कोई ऐसा है कि अव्वल बनाए फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाए[86] तुम फ़रमाओ **अल्लाह**

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۳۴﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ

अव्वल बनाता है फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाएगा तो कहां औंधे जाते हो[87] तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में

75 : बुतों को ख़ुदा का शरीक बताना और मा'बूद ठहराना। **76 :** और बातिल व बे हक़ीक़त साबित होंगी। **77 :** आस्मान से मींह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगा कर। **78 :** और येह हवास तुम्हें किस ने दिये हैं ? किस ने येह अ़जाइब तुम्हें इनायत किये हैं ? कौन इन्हें मुद्दतों महफ़ूज़ रखता है ? **79 :** इन्सान को नुत्फ़े से और नुत्फ़े को इन्सान से, परिन्द को अन्डे से और अन्डे को परिन्दे से, मोमिन को काफ़िर से और काफ़िर को मोमिन से, आ़लिम को जाहिल से और जाहिल को आ़लिम से। **80 :** और उस की कुदरते कामिला का ए'तिराफ़ करेंगे और इस के सिवा कुछ चारह न होगा। **81 :** उस के अ़ज़ाब से और क्यूं बुतों को पूजते और इन को मा'बूद बनाते हो बा वुजूदे कि वोह कुछ कुदरत नहीं रखते। **82 :** जिस की ऐसी कुदरते कामिला है **83 :** या'नी जब ऐसे बराहीने वाज़ेहा और दलाइले क़त़इय्या से साबित हो गया कि मुस्तहिक़े इबादत सिर्फ़ **अल्लाह** है तो मा सिवा उस के सब बातिल व ज़लाल (गुमराही) है और जब तुम ने उस की कुदरत को पहचान लिया और उस की कारसाज़ी का ए'तिराफ़ कर लिया तो **84 :** जो कुफ़्र में रासिख़ हो गए और रब की बात से मुराद या क़ज़ाए इलाही है या **अल्लाह** तआ़ला का इर्शाद لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ الآيه (बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा.....(اِلخ) **85 :** जिन्हें ऐ मुश्रिकीन ! तुम मा'बूद ठहराते हो। **86 :** इस का जवाब ज़ाहिर है कि कोई ऐसा नहीं क्यूं कि मुश्रिकीन भी येह जानते हैं कि पैदा करने वाला **अल्लाह** ही है, लिहाज़ा ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم ! **87 :** और ऐसी रोशन दलीलें क़ाइम होने के बा'द राहे रास्त से मुन्हरिफ़ होते हो।

www.dawateislami.net

مَّنْ يَّهِدِّيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهِدِّيْٓ اِلَى

कोई ऐसा है कि हक़ की राह दिखाए[88] तुम फ़रमाओ कि अल्लाह हक़ की राह दिखाता है तो क्या जो हक़ राह

الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۟ قف

दिखाए उस के हुक्म पर चलना चाहिये या उस के जो खुद ही राह न पाए जब तक राह न दिखाया जाए[89] तो तुम्हें क्या हुवा

كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ

कैसा हुक्म लगाते हो और उन[90] में अक्सर नहीं चलते मगर गुमान पर[91] बेशक गुमान हक़

مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هٰذَا

का कुछ काम नहीं देता बेशक अल्लाह उन के कामों को जानता है और इस कुरआन की

الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ

येह शान नहीं कि कोई अपनी तरफ़ से बना ले बे अल्लाह के उतारे[92] हां वोह अगली किताबों की

يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾ قف اَمْ

तस्दीक़ है[93] और लौह में जो कुछ लिखा है सब की तफ़्सील है इस में कुछ शक नहीं परवर्दगारे आलम की तरफ़ से है क्या

يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ

येह कहते हैं[94] कि उन्हों ने इसे बना लिया है तुम फ़रमाओ[95] तो इस जैसी एक सूरत ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर जो मिल सकें

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا

सब को बुला लाओ[96] अगर तुम सच्चे हो बल्कि इसे झुटलाया जिस के इल्म पर क़ाबू

88 : हुज्जतें और दलाइल क़ाइम कर के, रसूल भेज कर, किताबें नाज़िल फ़रमा कर, मुकल्लिफ़ीन को अ़क़्लो नज़र अ़ता फ़रमा कर, इस का वाज़ेह जवाब येह है कि कोई नहीं तो ऐ ह़बीब ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) **89 :** जैसे कि तुम्हारे बुत हैं कि किसी जगह जा नहीं सकते जब तक कि कोई उठा ले जाने वाला उन्हें उठा कर ले न जाए और न किसी चीज़ की ह़क़ीक़त को समझें और राहे ह़क़ को पहचानें बिग़ैर इस के कि अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़िन्दगी, अ़क़्ल और इदराक दे तो जब उन की मजबूरी का येह आ़लम है तो वोह दूसरों को क्या राह बता सकें ! ऐसों को मा'बूद बनाना, उन का मुतीअ़ बनना कितना बातिल और बेहूदा है। **90 :** मुश्रिकीन **91 :** जिस की उन के पास कोई दलील नहीं, न उस की सिह़्ह़त का जज़्मो यक़ीन, शक में पड़े हुए हैं और येह गुमान करते हैं कि पहले लोग भी बुत परस्ती करते थे उन्हों ने कुछ तो समझा होगा। **92 :** कुफ़्फ़ारे मक्का ने येह वह्म किया था कि कुरआने करीम सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने खुद बना लिया है, इस आयत में उन का येह वह्म दफ़्अ़ फ़रमाया गया कि कुरआने करीम ऐसी किताब ही नहीं जिस की निस्बत तरद्दुद हो सके, इस की मिसाल बनाने से सारी मख़्लूक़ आजिज़ है तो यक़ीनन वोह अल्लाह की नाज़िल फ़रमाई हुई किताब है। **93 :** तौरैत व इन्जील वग़ैरा की **94 :** कुफ़्फ़ार सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत **95 :** कि अगर तुम्हारा येह ख़याल है तो तुम भी अ़रब हो, फ़साह़तो बलाग़त के दा'वेदार हो, दुन्या में कोई इन्सान ऐसा नहीं है जिस के कलाम के मुक़ाबिल कलाम बनाने को तुम ना मुम्किन समझते हो, अगर तुम्हारे गुमान में येह इन्सानी कलाम है **96 :** और उन से मददें लो और सब मिल कर कुरआन जैसी एक सूरत तो बनाओ।

www.dawateislami.net

بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ

न पाया[97] और अभी उन्हों ने इस का अन्जाम नहीं देखा है[98] ऐसे ही उन से अगलों ने झुटलाया था[99] तो देखो

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۹﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا

ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुवा[100] और उन[101] में कोई इस[102] पर ईमान लाता है और उन में कोई इस पर

يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿۴۰﴾ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ

ईमान नहीं लाता है और तुम्हारा रब मुफ़्सिदों (फ़साद करने वालों) को खूब जानता है[103] और अगर वोह तुम्हें झुटलाएं[104] तो फ़रमा दो कि मेरे

عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّاۤ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا

लिये मेरी करनी और तुम्हारे लिये तुम्हारी करनी[105] तुम्हें मेरे काम से अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) नहीं और मुझे तुम्हारे काम

تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ

से तअ़ल्लुक़ नहीं[106] और उन में कोई वोह हैं जो तुम्हारी त़रफ़ कान लगाते हैं[107] तो क्या तुम बहरों को सुना दोगे अगर्चे

كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِي

उन्हें अ़क़्ल न हो[108] और उन में कोई तुम्हारी त़रफ़ तकता है[109] क्या तुम अन्धों को

الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّ

राह दिखा दोगे अगर्चे वोह न सूझें (न देख सकें) बेशक **अल्लाह** लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता[110]

لٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْۤا

हां लोग ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं[111] और जिस दिन उन्हें उठाएगा[112] गोया दुन्या में न रहे थे

97 : या'नी क़ुरआने पाक को समझने और जानने के बिग़ैर उन्हों ने इस की तक्ज़ीब की और येह कमाले जह्ल है कि किसी शै को जाने बिग़ैर उस का इन्कार किया जाए। क़ुरआने करीम का ऐसे उ़लूम पर मुश्तमिल होना जिन का मुद्दइयाने इल्मो ख़िरद (इल्मो अ़क़्ल के दा'वेदार) इह़ात़ा न कर सकें इस किताब की अ़ज़मतो जलालत ज़ाहिर करता है तो ऐसी आ'ला उ़लूम वाली किताब को मानना चाहिये था न कि इस का इन्कार करना **98 :** या'नी उस अ़ज़ाब को जिस की क़ुरआने पाक में वईदें हैं। **99 :** इनाद से अपने रसूलों को बिग़ैर इस के कि उन के मो'जिज़ात और आयात देख कर नज़र व तदब्बुर से काम लेते। **100 :** और पहली उम्मतें अपने अम्बिया को झुटला कर कैसे कैसे अ़ज़ाबों में मुब्तला हुई तो ऐ सय्यिदे अम्बिया! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) आप की तक्ज़ीब करने वालों को डरना चाहिये। **101 :** अहले मक्का **102 :** नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم या क़ुरआने करीम **103 :** जो इनाद से ईमान नहीं लाते और कुफ़्र पर मुसिर रहते हैं। **104 :** ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم! और उन की राह पर आने और ह़क़ व हिदायत क़बूल करने की उम्मीद मुन्क़त़अ़ हो जाए **105 :** हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा **106 :** किसी के अ़मल पर दूसरा माख़ूज़ (गिरिफ़्तार) न होगा जो पकड़ा जाएगा ख़ुद अपने अ़मल पर पकड़ा जाएगा, येह फ़रमाना बत़ौर ज़ज्र (तम्बीह) के है कि तुम नसीह़त नहीं मानते और हिदायत क़बूल नहीं करते तो इस का वबाल ख़ुद तुम पर होगा किसी दूसरे का इस से ज़रर नहीं। **107 :** और आप से क़ुरआने पाक और अह़कामे दीन सुनते हैं और बुग़्ज़ो अ़दावत की वज्ह से दिल में जगह नहीं देते और क़बूल नहीं करते तो येह सुनना बेकार है और वोह हिदायत से नफ़्अ़ न पाने में बहरों की मिस्ल हैं। **108 :** और वोह न ह़वास से काम लें न अ़क़्ल से। **109 :** और दलाइले सिद्क़ और ए'लामे नुबुव्वत को देखता है लेकिन तस्दीक़ नहीं करता और इस देखने से नतीजा नहीं निकालता, फ़ाएदा नहीं उठाता, दिल की बीनाई से मह़रूम और बात़िन का अन्धा है। **110 :** बल्कि उन्हें

www.dawateislami.net

اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ

मगर इस दिन की एक घड़ी[113] आपस में पहचान करेंगे[114] पूरे घाटे में रहे वोह

كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ

जिन्हों ने अल्लाह से मिलने को झुटलाया और हिदायत पर न थे[115] और अगर हम तुम्हें दिखा दें कुछ[116] उस में से

الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا

जो उन्हें वा'दा दे रहे हैं[117] या तुम्हें पहले ही अपने पास बुला लें[118] बहर हाल उन्हें हमारी तरफ़ पलट कर आना है फिर अल्लाह गवाह है[119] उन

يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ

के कामों पर और हर उम्मत में एक रसूल हुवा[120] जब उन का रसूल उन के पास आता[121] उन पर

بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ

इन्साफ़ का फ़ैसला कर दिया जाता[122] और उन पर जुल्म न होता और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ

सच्चे हो[123] तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का ज़ाती इख़्तियार नहीं रखता मगर जो अल्लाह

हिदायत और राह पाने के तमाम सामान अ़ता फ़रमाता है और रोशन दलाइल क़ाइम फ़रमाता है। **111 :** कि इन दलाइल में ग़ौर नहीं करते और हक़ वाज़ेह हो जाने के बा वुजूद खुद गुमराही में मुब्तला होते हैं। **112 :** क़ब्रों से मौक़िफ़े हिसाब (हिसाबो किताब की जगह) में हाज़िर करने के लिये तो उस रोज़ की हैबतो वहशत से येह हाल होगा कि वोह दुन्या में रहने की मुद्दत को बहुत थोड़ा समझेंगे और येह ख़याल करेंगे कि **113 :** और इस की वज्ह येह है कि चूंकि कुफ़्फ़ार ने तूलबे दुन्या में उम्रें ज़ाएअ़ कर दीं और अल्लाह की ताअ़त जो आज कारआमद होती बजा न लाए तो उन की ज़िन्दगानी का वक़्त उन के काम न आया इस लिये वोह इसे बहुत ही कम समझेंगे। **114 :** क़ब्रों से निकलते वक़्त तो एक दूसरे को पहचानेंगे जैसा दुन्या में पहचानते थे फिर रोज़े क़ियामत के अहवाल और दहशत नाक मनाज़िर देख कर येह मा'रिफ़त बाक़ी न रहेगी और एक क़ौल येह है कि रोज़े क़ियामत दम बदम हाल बदलेंगे, कभी ऐसा हाल होगा कि एक दूसरे को पहचानेंगे, कभी ऐसा कि न पहचानेंगे और जब पहचानेंगे तो कहेंगे **: 115 :** जो उन्हें घाटे से बचाती। **116 :** अ़ज़ाब **117 :** दुन्या ही में आप के ज़मानए हयात में तो वोह मुलाहज़ा कीजिये **118 :** तो आख़िरत में आप को उन का अ़ज़ाब दिखाएंगे। इस आयत से साबित हुवा कि अल्लाह तआ़ला अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को काफ़िरों के बहुत से अ़ज़ाब और उन की ज़िल्लतो रुस्वाइयां आप की हयाते दुन्या ही में आप को दिखाएगा चुनान्चे बद्र वग़ैरा में दिखाई गईं और जो अ़ज़ाब काफ़िरों के लिये ब सबबे कुफ़्र व तक्ज़ीब के आख़िरत में मुक़र्रर फ़रमाया है वोह आख़िरत में दिखाएगा। **119 :** मुत्तलअ़ है, अ़ज़ाब देने वाला है **120 :** जो उन्हें दीने हक़ की दा'वत देता और ताअ़त व ईमान का हुक्म करता। **121 :** और अहकामे इलाही की तब्लीग़ करता तो कुछ लोग ईमान लाते और कुछ तक्ज़ीब करते और मुन्किर हो जाते तो **122 :** कि रसूल को और उन पर ईमान लाने वालों को नजात दी जाती और तक्ज़ीब करने वालों को अ़ज़ाब से हलाक कर दिया जाता। आयत की तफ़्सीर में दूसरा क़ौल येह है कि इस में आख़िरत का बयान है और मा'ना येह हैं कि रोज़े क़ियामत हर उम्मत के लिये एक रसूल होगा जिस की तरफ़ वोह मन्सूब होगी जब वोह रसूल मौक़िफ़ (हिसाबो किताब की जगह) में आएगा और मोमिन व काफ़िर पर शहादत देगा तब उन में फ़ैसला किया जाएगा कि मोमिनों को नजात होगी और काफ़िर गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होंगे। **123 शाने नुज़ूल :** जब आयत "اِمَّا نُرِيَنَّكَ" में अ़ज़ाब की वईद दी गई तो काफ़िरों ने बराहे सरकशी येह कहा कि ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) जिस अ़ज़ाब का आप वा'दा देते हैं वोह कब आएगा ? उस में क्या ताख़ीर है ? उस अ़ज़ाब को जल्द लाइये, इस पर येह आयत नाज़िल हुई।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ

चाहे[124] हर गुरौह का एक वा'दा है[125] जब उन का वा'दा आएगा तो एक घड़ी न पीछे हटें

لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

न आगे बढ़ें तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर उस का अ़ज़ाब[126] तुम पर रात को आए[127] या दिन को[128]

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۰﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ

तो उस में वोह कौन सी चीज़ है कि मुजरिमों को जिस की जल्दी है तो क्या जब[129] हो पड़ेगा उस वक़्त इस का यक़ीन करोगे[130]

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا

क्या अब मानते हो पहले तो[131] इस की जल्दी मचा रहे थे फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा हमेशा

عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۵۲﴾

का अ़ज़ाब चखो तुम्हें कुछ और बदला न मिलेगा मगर वोही जो कमाते थे[132]

وقف النبي ﷺ
وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِیْ وَرَبِّیْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؔۚ وَمَاۤ اَنْتُمْ

और तुम से पूछते हैं क्या वोह[133] ह़क़ है तुम फ़रमाओ हां मेरे रब की क़सम बेशक वोह ज़रूर ह़क़ है और तुम कुछ थका

ع ۵
بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۵۳﴾ ع وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ

न सकोगे[134] और अगर हर ज़ालिम जान ज़मीन में जो कुछ है[135] सब की मालिक होती ज़रूर अपनी जान छुड़ाने में

بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ

देती[136] और दिल में चुपके चुपके पशेमान हुए जब अ़ज़ाब देखा और उन में इन्साफ़ से फ़ैसला कर दिया गया

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۵۴﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ

और उन पर ज़ुल्म न होगा सुन लो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में[137] सुन लो

124 : या'नी दुश्मनों पर अ़ज़ाब नाज़िल करना और दोस्तों की मदद करना और उन्हें ग़लबा देना येह सब ब मशिय्यते इलाही है और मशिय्यते इलाही में **125 :** उस के हलाक व अ़ज़ाब का एक वक़्त मुअ़य्यन है, लौहे़ मह़फ़ूज़ में मक्तूब है। **126 :** जिस की तुम जल्दी करते हो **127 :** जब तुम ग़ाफ़िल पड़े सोते हो। **128 :** जब तुम मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो। **129 :** वोह अ़ज़ाब तुम पर नाज़िल **130 :** उस वक़्त का यक़ीन कुछ फ़ाएदा न देगा और कहा जाएगा : **131 :** ब त़रीक़े तक्ज़ीब व इस्तिह्ज़ा **132 :** या'नी दुन्या में जो अ़मल करते थे और कुफ़्र व तक्ज़ीबे अम्बिया में मसरूफ़ रहते थे उसी का बदला। **133 :** बअ़्स और अ़ज़ाब जिस के नाज़िल होने की आप ने हमें ख़बर दी **134 :** या'नी वोह अ़ज़ाब तुम्हें ज़रूर पहुंचेगा **135 :** मालो मताअ़ ख़ज़ाना व दफ़ीना **136 :** और रोज़े क़ियामत उस को अपनी रिहाई के लिये फ़िदया कर डालती, मगर येह फ़िदया क़बूल नहीं और तमाम दुन्या की दौलत ख़र्च कर के भी अब रिहाई मुम्किन नहीं, जब क़ियामत में येह मन्ज़र पेश आया और कुफ़्फ़ार की उम्मीदें टूटीं **137 :** तो काफ़िर किसी चीज़ का मालिक ही नहीं बल्कि वोह ख़ुद भी **अल्लाह** का मम्लूक है, इस का फ़िदया देना मुम्किन ही नहीं।

اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ هُوَ يُحْيٖ وَ

बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है मगर उन में अक्सर को ख़बर नहीं वोह जिलाता और

يُمِيْتُ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۵۶﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ

मारता है और उसी की तरफ़ फिरोगे ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत

رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ۬ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾

आई[138] और दिलों की सिह्हत और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिये

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا

तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें[139] वोह उन के सब

يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ

धन दौलत से बेहतर है तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वोह जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये रिज़्क़ उतारा उस में तुम ने

مِّنْهُ حَرَامًا وَّ حَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ

अपनी तरफ़ से ह़राम व ह़लाल ठहरा लिया[140] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह ने इस की तुम्हें इजाज़त दी या अल्लाह पर झूट बांधते हो[141] और

مَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

क्या गुमान है उन का जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं कि क़ियामत में उन का क्या ह़ाल होगा बेशक अल्लाह

138 : इस आयत में क़ुरआने करीम के आने और इस के मौइ़ज़त व शिफ़ा व हिदायत व रह़मत होने का बयान है कि येह किताब इन फ़वाइदे अ़ज़ीमा की जामेअ़ है। **मौइ़ज़त** के मा'ना हैं वोह चीज़ जो इन्सान को मरग़ूब की तरफ़ बुलाए और ख़त़रे से बचाए। ख़लील ने कहा कि मौइ़ज़त नेकी की नसीह़त करना है जिस से दिल में नरमी पैदा हो। **शिफ़ा** से मुराद येह है कि क़ुरआने पाक क़ल्बी अमराज़ को दूर करता है। दिल के अमराज़, अख़्लाक़े ज़मीमा, अ़क़ाइदे फ़ासिदा और जहालते मोहलिका हैं, क़ुरआने पाक इन तमाम अमराज़ को दूर करता है। क़ुरआने करीम की सिफ़त में हिदायत भी फ़रमाया क्यूं कि वोह गुमराही से बचाता और राहे ह़क़ दिखाता है और ईमान वालों के लिये रह़मत इस लिये फ़रमाया कि वोही इस से फ़ाएदा उठाते हैं। **139 : फ़रह़ :** किसी प्यारी और मह़बूब चीज़ के पाने से दिल को जो लज़्ज़त ह़ासिल होती है उस को फ़रह़ कहते हैं। मा'ना येह हैं कि ईमान वालों को अल्लाह के फ़ज़्लो रह़मत पर ख़ुश होना चाहिये कि उस ने इन्हें मवाइ़ज़ और शिफ़ाए सुदूर और ईमान के साथ दिल की राह़त व सुकून अ़त़ा फ़रमाए। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास व ह़सन व क़तादा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) ने कहा कि अल्लाह के फ़ज़्ल से इस्लाम और उस की रह़मत से क़ुरआन मुराद है। एक क़ौल येह है कि फ़ज़्लुल्लाह से क़ुरआन और रह़मत से अह़ादीस मुराद हैं। **140 :** जैसे कि अहले जाहिलिय्यत ने बह़ीरा साइबा वग़ैरा को अपनी तरफ़ से ह़राम क़रार दे लिया था। **141 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि किसी चीज़ को अपनी तरफ़ से ह़लाल या ह़राम करना मम्नूअ़ और ख़ुदा पर इफ़्तिरा है (अल्लाह की पनाह) आज कल बहुत लोग इस में मुब्तला हैं मम्नूआ़त को ह़लाल कहते हैं और मुबाह़ात को ह़राम, बा'ज़ सूद को ह़लाल करने पर मुसिर हैं, बा'ज़ तस्वीरों को, बा'ज़ खेल तमाशों को, बा'ज़ औ़रतों की बे क़ैदियों और बे पर्दगियों को, बा'ज़ भूक हड़ताल को जो ख़ुदकुशी है मुबाह़ समझते हैं और ह़लाल ठहराते हैं और बा'ज़ लोग ह़लाल चीज़ों को ह़राम ठहराने पर मुसिर हैं जैसे मह़फ़िले मीलाद को, फ़ातिहा को, ग्यारहवीं को और दीगर त़रीक़ाहाए ईसाले सवाब को, बा'ज़ मीलाद शरीफ़ व फ़ातिहा व तोशे की शीरीनी व तबर्रुक को जो सब ह़लाल व त़य्यिब चीज़ें हैं ना जाइ़ज़ व मम्नूअ़ बताते हैं, इसी को क़ुरआने पाक ने ख़ुदा पर इफ़्तिरा करना बताया है।

www.dawateislami.net

لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَمَا تَكُوْنُ ع ٦

लोगों पर फ़ज़्ल करता है[142] मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते और तुम किसी

فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا

काम में हो[143] और उस की त़रफ़ से कुछ कुरआन पढ़ो और तुम लोग[144] कोई काम करो हम

عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ

तुम पर गवाह होते हैं जब तुम उस को शुरूअ़ करते हो और तुम्हारे रब से

مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ

ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ाइब नहीं ज़मीन में न आस्मान में और न इस से छोटी और न इस

اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾ اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

से बड़ी कोई चीज़ जो एक रोशन किताब में न हो[145] सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ ؕ لَهُمُ الْبُشْرٰى

न कुछ ग़म[146] वोह जो ईमान लाए और परहेज़ गारी करते हैं उन्हें ख़ुश ख़बरी है

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ

दुन्या की ज़िन्दगी में[147] और आख़िरत में अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं[148] येही

142 : कि रसूल भेजता है किताबें नाज़िल फ़रमाता है और ह़लाल व ह़राम से बा ख़बर फ़रमाता है। **143 :** ऐ ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **144 :** ऐ मुसल्मानो ! **145 :** किताबे मुबीन से लौह़े मह़फ़ूज़ मुराद है। **146 :** वली की अस्ल विला से है जो क़ुर्ब व नुसरत के मा'ना में है। वलिय्युल्लाह वोह है जो फ़राइज़ से क़ुर्बे इलाही ह़ासिल करे और इत़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल रहे और उस का दिल नूरे जलाले इलाही की मा'रिफ़त में मुस्त़ग़रक़ हो, जब देखे दलाइले क़ुदरते इलाही को देखे और जब सुने अल्लाह की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब की सना ही के साथ बोले और जब ह़रकत करे त़ाअ़ते इलाही में ह़रकत करे और जब कोशिश करे उसी अम्र में कोशिश करे जो ज़रीअ़ए क़ुर्बे इलाही हो, अल्लाह के ज़िक्र से न थके और चश्मे दिल से ख़ुदा के सिवा किसी ग़ैर को न देखे येह सिफ़त औलिया की है, बन्दा जब इस ह़ाल पर पहुंचता है तो अल्लाह उस का वली व नासिर और मुईनो मददगार होता है। मुतकल्लिमीन कहते हैं : वली वोह है जो ए'तिक़ादे सह़ीह़ मब्नी बर दलील रखता हो और आ'माले सालिह़ा शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बजा लाता हो। बा'ज़ आ़रिफ़ीन ने फ़रमाया कि विलायत नाम है क़ुर्बे इलाही और हमेशा अल्लाह के साथ मश्ग़ूल रहने का, जब बन्दा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो उस को किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं रहता और न किसी शै के फ़ौत होने का ग़म होता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वली वोह है जिस को देखने से अल्लाह याद आए। येही त़बरी की ह़दीस में भी है। इब्ने ज़ैद ने कहा कि वली वोही है जिस में वोह सिफ़त हो जो इस आयत में मज़्कूर है "اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ" या'नी ईमान व तक़्वा दोनों का जामेअ़ हो। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि वली वोह हैं जो ख़ालिस अल्लाह के लिये मह़ब्बत करें। औलिया की येह सिफ़त अह़ादीसे कसीरा में वारिद हुई है। बा'ज़ अकाबिर ने फ़रमाया : वली वोह हैं जो त़ाअ़त से क़ुर्बे इलाही की त़लब करते हैं और अल्लाह तआ़ला करामत से उन की कारसाज़ी फ़रमाता है या वोह जिन की हिदायत का बुरहान के साथ अल्लाह कफ़ील हो और वोह उस का ह़क़्क़े बन्दगी अदा करने और उस की ख़ल्क़ पर रह़म करने के लिये वक़्फ़ हो गए। येह मआ़नी और इ़बारात अगर्चे जुदागाना हैं लेकिन इन में इख़्तिलाफ़ कुछ भी नहीं है, क्यूं कि हर एक इ़बारत में वली की एक एक सिफ़त बयान कर दी गई है जिसे क़ुर्बे इलाही ह़ासिल होता है येह तमाम सिफ़ात उस में होते हैं, विलायत के दरजे और मरातिब में हर एक ब क़दर अपने दरजे के फ़ज़्लो शरफ़ रखता है **147 :** इस ख़ुश ख़बरी

www.dawateislami.net

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ

बड़ी काम्याबी है और तुम उन की बातों का ग़म न करो[149] बेशक इ़ज़्ज़त सारी अल्लाह के लिये है[150] वोही

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ

सुनता जानता है सुन लो बेशक अल्लाह ही की मिल्क हैं जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीनों में[151]

وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا

और काहे के पीछे जा रहे हैं[152] वोह जो अल्लाह के सिवा शरीक पुकार रहें हैं वोह तो पीछे नहीं जाते मगर

الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ

गुमान के और वोह तो नहीं मगर अट्कलें दौड़ाते (अन्दाज़े करते)[153] वोही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई

لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

कि इस में चैन पाओ[154] और दिन बनाया तुम्हारी आंखें खोलता[155] बेशक इस में निशानियां हैं सुनने

يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي

वालों के लिये[156] बोले अल्लाह ने अपने लिये औलाद बनाई[157] पाकी उस को वोही बे नियाज़ है उसी का है जो कुछ

से या तो वोह मुराद है जो परहेज़ गार ईमानदारों को क़ुरआने करीम में जा ब जा दी गई है या बेहतरीन ख़्वाब मुराद है जो मोमिन देखता है या उस के लिये देखा जाता है जैसा कि कसीर अहादीस में वारिद हुवा है और इस का सबब येह है कि वली का क़ल्ब और उस की रूह दोनों ज़िक्रे इलाही में मुस्तग़रक़ रहते हैं तो वक़्ते ख़्वाब उस के दिल में सिवाए ज़िक्रो मा'रिफ़ते इलाही के और कुछ नहीं होता। इस लिये वली जब ख़्वाब देखता है तो उस का ख़्वाब हक़ और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उस के हक़ में बिशारत होती है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस बिशारत से दुन्या की नेकनामी भी मुराद ली है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सय्यिदे आ़लम ﷺ से अ़र्ज़ किया गया : उस शख़्स के लिये क्या इर्शाद फ़रमाते हैं जो नेक अ़मल करता है और लोग उस की ता'रीफ़ करते हैं। फ़रमाया : येह मोमिन के लिये बिशारते आ़जिला है। उ़लमा फ़रमाते हैं कि येह बिशारते आ़जिला रिज़ाए इलाही और अल्लाह की महब्बत फ़रमाने और ख़ल्क़ के दिल में महब्बत डाल देने की दलील है, जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया है कि उस को ज़मीन में मक़्बूल कर दिया जाता है। क़तादा ने कहा कि मलाएका वक़्ते मौत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बिशारत देते हैं। अ़त़ा का क़ौल है कि दुन्या की बिशारत तो वोह है जो मलाएका वक़्ते मौत सुनाते हैं और आख़िरत की बिशारत वोह है जो मोमिन को जान निकलने के बा'द सुनाई जाती है कि इस से अल्लाह राज़ी है। **148 :** उस के वा'दे ख़िलाफ़ नहीं हो सकते जो उस ने अपनी किताब में और अपने रसूलों की ज़बान से अपने औलिया और अपने फ़रमां बरदार बन्दों से फ़रमाए। **149 :** इस में सय्यिदे आ़लम ﷺ की तस्कीन फ़रमाई गई कि कुफ़्फ़ारे ना बकार जो आप की तक्ज़ीब करते हैं और आप के ख़िलाफ़ बुरे बुरे मश्वरे करते हैं आप उस का कुछ ग़म न फ़रमाएं। **150 :** वोह जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे। ऐ सय्यिदे अम्बिया ! वोह आप का नासिर व मददगार है उस ने आप को और आप के सदक़े में आप के फ़रमां बरदारों को इ़ज़्ज़त दी, जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया कि अल्लाह के लिये इ़ज़्ज़त है और उस के रसूल के लिये और ईमानदारों के लिये। **151 :** सब उस के मम्लूक हैं उस के तह़्ते क़ुदरतो इख़्तियार और मम्लूक रब नहीं हो सकता, इस लिये कि अल्लाह के सिवा हर एक की परस्तिश बात़िल है, येह तौह़ीद की एक उ़म्दा बुरहान है। **152 :** या'नी किस दलील का इत्तिबाअ़ करते हैं। मुराद येह है कि उन के पास कोई दलील नहीं। **153 :** और बे दलील महज़ गुमाने फ़ासिद से अपने बात़िल मा'बूदों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं, इस के बा'द अल्लाह तआ़ला अपनी क़ुदरत व ने'मत का इज़्हार फ़रमाता है। **154 :** और आराम कर के दिन की तकान दूर करो। **155 :** रोशन ताकि तुम अपने ह़वाइज (ह़ाजात) व अस्बाबे मआ़श का सर अन्जाम कर सको। **156 :** जो सुनें और समझें कि जिस ने इन चीज़ों को पैदा किया वोही मा'बूद है उस का कोई शरीक नहीं, इस के बा'द मुश्रिकीन का एक मक़ूला ज़िक्र फ़रमाता है **157 :** कुफ़्फ़ार का येह कलिमा निहायत क़बीह़ और इन्तिहा दरजे के जह्ल का है, अल्लाह तआ़ला इस का रद फ़रमाता है।

www.dawateislami.net

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[158] तुम्हारे पास इस की कोई भी सनद नहीं

اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى

क्या **अल्लाह** पर वोह बात बताते हो जिस का तुम्हें इल्म नहीं तुम फ़रमाओ वोह जो **अल्लाह** पर

اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ؕ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ

झूट बांधते हैं उन का भला न होगा दुन्या में कुछ बरत लेना (फ़ाएदा उठाना) है फिर उन्हें हमारी त़रफ़ वापस आना फिर

الربع الثلثة

نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ع وَاتْلُ عَلَيْهِمْ

हम उन्हें सख़्त अ़ज़ाब चखाएंगे बदला उन के कुफ़्र का और उन्हें नूह की ख़बर

وقف لازم

نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ

पढ़ कर सुनाओ जब उस ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम पर शाक़ (ना गवार) गुज़रा है मेरा खड़ा होना[159]

وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْۤا اَمْرَكُمْ

और **अल्लाह** की निशानियां याद दिलाना[160] तो मैं ने **अल्लाह** ही पर भरोसा किया[161] तो मिल कर काम करो

وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْۤا اِلَيَّ وَلَا

और अपने झूटे मा'बूदों समेत अपना काम पक्का कर लो फिर तुम्हारे काम में तुम पर कुछ गुन्जलक (उल्झन व पोशीदगी) न रहे फिर जो हो सके मेरा कर लो और

تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا

मुझे मोहलत न दो[162] फिर अगर तुम मुंह फेरो[163] तो मैं तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता[164] मेरा अज्र तो नहीं मगर

158 : यहां मुशरिकीन के इस मकूले (**अल्लाह** ने अपने लिये औलाद बनाई) के तीन रद फ़रमाए **पहला** रद तो कलिमा "سُبْحٰنَهٗ" में है जिस में बताया गया कि उस की ज़ात वलद से मुनज़्ज़ा है कि वोह वाहि़दे ह़क़ीक़ी है। **दूसरा** रद "هُوَ الْغَنِيُّ" फ़रमाने में है कि वोह तमाम ख़ल्क़ से बे नियाज़ है तो औलाद उस के लिये कैसे हो सकती है? औलाद तो या कमज़ोर चाहता है जो उस से क़ुव्वत ह़ासिल करे या फ़क़ीर चाहता है जो उस से मदद ले या ज़लील चाहता है जो उस के ज़रीए से इ़ज़्ज़त ह़ासिल करे ग़रज़ जो चाहता है वोह ह़ाजत रखता है तो जो ग़नी हो या ग़ैर मोह़ताज हो उस के लिये वलद किस त़रह़ हो सकता है, नीज़ वलद वालिद का एक जुज़्व होता है तो वालिद होना मुरक्कब होने को मुस्तल्ज़िम और मुरक्कब होना मुम्किन होने को और हर मुम्किन ग़ैर का मोह़ताज है तो ह़ादिस हुवा, लिहाज़ा मुह़ाल हुवा कि ग़नी क़दीम के वलद हो। **तीसरा** रद "لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ" में है कि तमाम ख़ल्क़ उस की मम्लूक है और मम्लूक होना बेटा होने के साथ नहीं जम्अ़ होता, लिहाज़ा इन में से कोई उस की औलाद नहीं हो सकता। **159 :** और मुद्दते दराज़ तक तुम में ठहरना **160 :** और इस पर तुम ने मेरे क़त्ल करने और निकाल देने का इरादा किया है **161 :** और अपना मुआ़मला उस वाहि़द لَا شَرِيْكَ لَهٗ के सिपुर्द किया। **162 :** मुझे कुछ परवाह नहीं है, ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह कलाम ब त़रीक़े ता'जीज़ (आ़जिज़ कर देने के लिये) है, मुद्दआ़ येह है कि मुझे अपने क़वी व क़ादिर परवर्दगार पर कामिल भरोसा है तुम और तुम्हारे बे इख़्तियार मा'बूद मुझे कुछ भी ज़रर नहीं पहुंचा सकते। **163 :** मेरी नसीह़त से **164 :** जिस के फ़ौत होने का मुझे अफ़्सोस हो।

www.dawateislami.net

عَلَى اللّٰهِ ۙ وَ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۷۲﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَ

अल्लाह पर[165] और मुझे हुक्म है कि मैं मुसल्मानों से हूं तो उन्हों ने उसे[166] झुटलाया तो हम ने उसे और

مَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَ جَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

जो उस के साथ कश्ती में थे उन को नजात दी और उन्हें हम ने नाइब किया[167] और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं उन को

بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۷۳﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ

हम ने डुबो दिया तो देखो डराए हुओं का अन्जाम कैसा हुवा फिर इस के बा'द और

رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا

रसूल[168] हम ने उन की क़ौमों की तरफ़ भेजे तो वोह उन के पास रोशन दलीलें लाए तो वोह ऐसे न थे कि ईमान लाते उस पर

كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۷۴﴾ ثُمَّ

जिसे पहले झुटला चुके थे हम यूंही मोहर लगा देते हैं सरकशों के दिलों पर फिर

بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَ هٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا

उन के बा'द हम ने मूसा और हारून को फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों की तरफ़ अपनी निशानियां दे कर भेजा

فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ

तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम लोग थे तो जब उन के पास हमारी तरफ़ से

عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷۶﴾ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ

हक़ आया[169] बोले येह तो ज़रूर खुला जादू है मूसा ने कहा क्या हक़ की निस्बत ऐसा कहते हो

لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَ لَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿۷۷﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا

जब वोह तुम्हारे पास आया क्या येह जादू है[170] और जादूगर मुराद को नहीं पहुंचते बोले[171] क्या तुम हमारे पास

لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَ تَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي

इस लिये आए हो कि हमें उस[172] से फेर दो जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया और ज़मीन में तुम्हीं दोनों

165 : वोही मुझे जज़ा देगा, मुद्दआ़ येह है कि मेरा वा'ज़ो नसीह़त ख़ास अल्लाह के लिये है किसी दुन्यवी ग़रज़ से नहीं। 166 : या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को 167 : और हलाक होने वालों के बा'द ज़मीन में साकिन किया। 168 : हूद, सालेह़, इब्राहीम, लूत़, शुऐ़ब वग़ैरहुम عَلَيْهِمُ السَّلَام। 169 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वासित़े से और फ़िरऔ़नियों ने पहचान लिया कि येह हक़ है अल्लाह की तरफ़ से है तो बराहे नफ़्सानिय्यत 170 : हरगिज़ नहीं 171 : फ़िरऔ़नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से 172 : दीनो मिल्लत और बुत परस्ती व फ़िरऔ़न परस्ती

www.dawateislami.net

الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ

की बड़ाई रहे और हम तुम पर ईमान लाने के नहीं और फ़िरऔन[173] बोला हर जादूगर

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ

इल्म वाले को मेरे पास ले आओ फिर जब जादूगर आए उन से मूसा ने कहा डालो जो

اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ

तुम्हें डालना है[174] फिर जब उन्हों ने डाला मूसा ने कहा येह जो तुम लाए येह जादू है[175]

اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾ وَيُحِقُّ

अब अल्लाह उसे बातिल कर देगा अल्लाह मुफ़्सिदों का काम नहीं बनाता और अल्लाह अपनी

اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ ع ٨

बातों से[176] हक़ को हक़ कर दिखाता है पड़े बुरा मानें मुजरिम तो मूसा पर ईमान न लाए मगर उस की क़ौम की औलाद से

مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ

कुछ लोग[177] फ़िरऔन और उस के दरबारियों से डरते हुए कि कहीं उन्हें[178] हटने पर मजबूर न कर दें और बेशक

فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ

फ़िरऔन ज़मीन में सर उठाने वाला था और बेशक वोह हद से गुज़र गया[179] और मूसा

173 : सरकश व मुतकब्बिर ने चाहा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़े का मुक़ाबला बातिल से करे और दुन्या को इस मुग़ालते में डाले कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात (مَعَاذَاللّٰه) जादू की क़िस्म से हैं इस लिये वोह 174 : रस्से शहतीर वग़ैरा और जो तुम्हें जादू करना है करो। येह आप ने इस लिये फ़रमाया कि हक़ व बातिल ज़ाहिर हो जाए और जादू के करिश्मे जो वोह करने वाले हैं उन का फ़साद वाज़ेह हो। 175 : न कि वोह आयाते इलाहिय्यह जिन को फ़िरऔन ने अपनी बे ईमानी से जादू बताया। 176 : या'नी अपने हुक्म अपनी क़ज़ा व क़दर और अपने इस वा'दे से कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जादूगरों पर ग़ालिब करेगा। 177 : इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि आप अपनी उम्मत के ईमान लाने का निहायत एहतिमाम फ़रमाते थे और उन के ए'राज़ करने से मग़मूम होते थे आप की तस्कीन फ़रमाई गई कि बा वुजूदे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इतना बड़ा मो'जिज़ा दिखाया फिर भी थोड़े लोगों ने ईमान क़बूल किया, ऐसी हालतें अम्बिया को पेश आती रही हैं आप अपनी उम्मत के ए'राज़ से रन्जीदा न हों "مِنْ قَوْمِهٖ" में जो ज़मीर है वोह या तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तरफ़ राजेअ़ है। इस सूरत में क़ौम की ज़ुर्रिय्यत से बनी इसराईल मुराद होंगे जिन की औलाद मिस्र में आप के साथ थी और एक क़ौल येह है कि इस से वोह लोग मुराद हैं जो फ़िरऔन के क़त्ल से बच रहे थे क्यूं कि जब बनी इसराईल के लड़के ब हुक्मे फ़िरऔन क़त्ल किये जाते थे तो बनी इसराईल की बा'ज़ औरतें जो क़ौमे फ़िरऔन की औरतों के साथ कुछ रस्मो राह रखती थीं वोह जब बच्चा जनतीं तो उस की जान के अन्देशे से वोह बच्चा फ़िरऔनी क़ौम की औरतों को दे डालतीं, ऐसे बच्चे जो फ़िरऔनियों के घरों में पले थे उस रोज़ हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आए जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने आप को जादूगरों पर ग़लबा दिया था और एक क़ौल येह है कि येह ज़मीर फ़िरऔन की तरफ़ राजेअ़ है और क़ौमे फ़िरऔन की ज़ुर्रिय्यत (औलाद) मुराद है। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि वोह क़ौमे फ़िरऔन के थोड़े लोग थे जो ईमान लाए। 178 : दीन से 179 : कि बन्दा हो कर ख़ुदाई का मुद्दई हुवा।

www.dawateislami.net

مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ

ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए तो उसी पर भरोसा करो[180] अगर इस्लाम

مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ

रखते हो बोले हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया इलाही हम को ज़ालिम लोगों के लिये

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ ۙ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ

आज़माइश न बना[181] और अपनी रहमत फ़रमा कर हमें काफ़िरों से नजात दे[182] और हम ने

اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ

मूसा और उस के भाई को वह्य भेजी कि मिस्र में अपनी क़ौम के लिये मकानात बनाओ और अपने घरों को नमाज़ की जगह

قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ

करो[183] और नमाज़ क़ाइम रखो और मुसल्मानों को ख़ुश ख़बरी सुना[184] और मूसा ने अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे

اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا

तू ने फ़िरऔ़न और उस के सरदारों को आराइश[185] और माल दुन्या की ज़िन्दगी में दिये ऐ रब हमारे

لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

इस लिये कि तेरी राह से बहकावें ऐ रब हमारे इन के माल बरबाद कर दे[186] और इन के दिल सख़्त कर दे

فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ

कि ईमान न लाएं जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें[187] फ़रमाया तुम दोनों की दुआ़

دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

क़बूल हुई[188] तो साबित क़दम रहो[189] और नादानों की राह न चलो[190]

180 : वोह अपने फ़रमां बरदारों की मदद करता और दुश्मनों को हलाक फ़रमाता है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि अल्लाह पर भरोसा करना कमाले ईमान का मुक़तज़ा है **181 :** या'नी उन्हें हम पर ग़ालिब न कर ताकि वोह येह गुमान न करें कि वोह हक़ पर हैं। **182 :** और उन के ज़ुल्मो सितम से बचा। **183 :** कि क़िब्ला रू हो, हज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام का क़िब्ला का'बा शरीफ़ था और इब्तिदा में बनी इसराईल को येही हुक्म था कि वोह घरों में छुप कर नमाज़ पढ़ें ताकि फ़िरऔ़नियों के शर व ईज़ा से महफ़ूज़ रहें। **184 :** मददे इलाही की और जन्नत की **185 :** उ़म्दा लिबास नफ़ीस फ़र्श क़ीमती ज़ेवर त़रह त़रह के सामान **186 :** कि वोह तेरी ने'मतों पर बजाए शुक्र के जरी हो कर मा'सियत करते हैं। हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ क़बूल हुई और फ़िरऔ़नियों के दिरहमो दीनार वग़ैरा पथ्थर हो कर रह गए ह़त्ता कि फल और खाने की चीज़ें भी और येह उन नव निशानियों में से एक है जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दी गई थीं। **187 :** जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हो गए तब आप ने उन के लिये येह दुआ़ की और ऐसा ही हुवा कि वोह ग़र्क़ होने के वक़्त तक ईमान न लाए। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी शख़्स के लिये कुफ़्र पर मरने की दुआ़ करना कुफ़्र नहीं है। (مدارک) **188 :** दुआ़ की निस्बत हज़रते मूसा

www.dawateislami.net

وَجٰوَزْنَا بِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْیًا وَّ

और हम बनी इसराईल को दरिया पार ले गए तो फ़िरऔ़न और उस के लश्करों ने उन का पीछा किया सरकशी और

عَدْوًا ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ

ज़ुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया[191] बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मा'बूद नहीं सिवा उस के

اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۰﴾ آٰلْـٰٔنَ وَ قَدْ

जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए और मैं मुसल्मान हूं[192] क्या अब[193] और

عَصَیْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۹۱﴾ فَالْیَوْمَ نُنَجِّیْكَ بِبَدَنِكَ

पहले से ना फ़रमान रहा और तू फ़सादी था[194] आज हम तेरी लाश को उतरा दें (बाक़ी रखें)गे

لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰیَةً ؕ وَاِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰیٰتِنَا

कि तू अपने पिछलों के लिये निशानी हो[195] और बेशक लोग हमारी आयतों से

لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾ ع وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ ع ۱۰

ग़ाफ़िल हैं और बेशक हम ने बनी इसराईल को इ़ज़्ज़त की जगह दी[196] और उन्हें

مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ یَقْضِیْ

सुथरी रोज़ी अ़ता की तो इख़्तिलाफ़ में न पड़े[197] मगर इ़ल्म आने के बा'द[198] बेशक तुम्हारा रब क़ियामत

व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام दोनों की त़रफ़ की गई बा वुजूदे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام दुआ़ करते थे और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام आमीन कहते थे। इस से मा'लूम हुवा कि आमीन कहने वाला भी दुआ़ करने वालों में शुमार किया जाता है। **मस्अला :** येह भी साबित हुवा कि आमीन दुआ़ है लिहाज़ा इस के लिये इख़्फ़ा (आहिस्ता कहना) ही मुनासिब है। (مدارک) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ और उस की मक़्बूलिय्यत के दरमियान चालीस बरस का फ़ासिला हुवा। **189 :** दा'वतो तब्लीग़ पर **190 :** जो क़बूले दुआ़ में देर होने की हिक्मत नहीं जानते। **191 :** तब फ़िरऔ़न **192 :** फ़िरऔ़न ने ब तमन्नाए क़बूल ईमान का मज़्मून तीन मरतबा तक्रार के साथ अदा किया लेकिन येह ईमान क़बूल न हुवा क्यूं कि मलाएका और अ़ज़ाब के देखने के बा'द ईमान मक़्बूल नहीं, अगर ह़ालते इख़्तियार में वोह एक मरतबा भी येह कलिमा कहता तो उस का ईमान क़बूल कर लिया जाता लेकिन उस ने वक़्त खो दिया इस लिये उस से येह कहा गया जो आयत में आगे मज़्कूर है। **193 :** ह़ालते इज़्तिरार में जब कि ग़र्क़ में मुब्तला हो चुका है और ज़िन्दगानी की उम्मीद बाक़ी नहीं रही उस वक़्त ईमान लाता है **194 :** ख़ुद गुमराह था, दूसरों को गुमराह करता था। मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام फ़िरऔ़न के पास एक इस्तिफ़्ता लाए जिस का मज़्मून येह था कि बादशाह का क्या ह़ुक्म है ऐसे ग़ुलाम के ह़क़ में जिस ने एक शख़्स के माल व ने'मत में परवरिश पाई फिर उस की नाशुक्री की और उस के ह़क़ का मुन्किर हो गया और अपने आप मौला होने का मुद्दई बन गया ? इस पर फ़िरऔ़न ने येह जवाब लिखा कि जो ग़ुलाम अपने आक़ा की ने'मतों का इन्कार करे और उस के मुक़ाबिल आए उस की सज़ा येह है कि उस को दरिया में डुबो दिया जाए जब फ़िरऔ़न डूबने लगा तो ह़ज़रते जिब्रील ने उस का वोही फ़तवा उस के सामने कर दिया और उस ने उस को पहचान लिया। (سُبْحٰنَ اللّٰه) **195 :** उ़लमाए तफ़्सीर कहते हैं कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को ग़र्क़ किया और मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को उन की हलाकत की ख़बर दी तो बा'ज़ बनी इसराईल को शुबा रहा और उस की अ़ज़्मतो हैबत जो उन के क़ुलूब में थी उस के बाइ़स उन्हें उस की हलाकत का यक़ीन न आया, ब अम्रे इलाही दरिया ने फ़िरऔ़न की लाश साह़िल पर फेंक दी, बनी इसराईल ने उस को देख कर पहचाना **196 :** इ़ज़्ज़त की जगह से या तो मुल्के मिस्र और फ़िरऔ़न व फ़िरऔ़नियों के अम्लाक (जाएदाद) मुराद हैं या सर ज़मीने शाम व क़ुदुस व उर्दुन जो निहायत सर सब्ज़ो शादाब और ज़रख़ेज़ बिलाद (शह्र) हैं। **197 :** बनी इसराईल जिन के

www.dawateislami.net

بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فِيۡمَا كَانُوۡا فِيۡهِ يَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۹۳﴾ فَاِنۡ كُنۡتَ فِىۡ شَكٍّ

के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ते थे[199] और ऐ सुनने वाले अगर तुझे कुछ शुबा हो

مِّمَّاۤ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ فَسۡـَٔلِ الَّذِيۡنَ يَقۡرَءُوۡنَ الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۚ لَقَدۡ

उस में जो हम ने तेरी त़रफ़ उतारा[200] तो उन से पूछ देख जो तुझ से पहले किताब पढ़ने वाले हैं[201] बेशक

جَآءَكَ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡمُمۡتَرِيۡنَ ﴿۹۴﴾ وَلَا تَكُوۡنَنَّ

तेरे पास तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ आया[202] तो तू हरगिज़ शक वालों में न हो और हरगिज़ उन

مِنَ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوۡنَ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ

में न होना जिन्हों ने अल्लाह की आयतें झुटलाईं कि तू ख़सारे वालों में हो जाएगा बेशक वोह

حَقَّتۡ عَلَيۡهِمۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۹۶﴾ وَلَوۡ جَآءَتۡهُمۡ كُلُّ اٰيَةٍ

जिन पर तेरे रब की बात ठीक पड़ चुकी है[203] ईमान न लाएंगे अगर्चे सब निशानियां उन के पास आएं

حَتّٰى يَرَوُا الۡعَذَابَ الۡاَلِيۡمَ ﴿۹۷﴾ فَلَوۡلَا كَانَتۡ قَرۡيَةٌ اٰمَنَتۡ فَنَفَعَهَاۤ

जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें[204] तो हुई होती न कोई बस्ती[205] कि ईमान लाती[206] तो उस का ईमान

اِيۡمَانُهَاۤ اِلَّا قَوۡمَ يُوۡنُسَ ؕ لَمَّاۤ اٰمَنُوۡا كَشَفۡنَا عَنۡهُمۡ عَذَابَ الۡخِزۡىِ فِى

काम आता हां यूनुस की क़ौम जब ईमान लाए हम ने उन से रुस्वाई का अ़ज़ाब

الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَمَتَّعۡنٰهُمۡ اِلٰى حِيۡنٍ ﴿۹۸﴾ وَلَوۡ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنۡ فِى

दुन्या की ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरत्ने दिया[207] और अगर तुम्हारा रब चाहता ज़मीन में

साथ येह वाक़िआत हो चुके **198 :** इल्म से मुराद यहां या तो तौरैत है जिस के मा'ना में यहूद बाहम इख़्तिलाफ़ करते थे या सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी है कि इस से पहले तो यहूद सब आप के मुक़िर (मानने वाले) और आप की नुबुव्वत पर मुत्तफ़िक़ थे और तौरैत में जो आप की सिफ़ात मज़्कूर थीं उन को मानते थे लेकिन तशरीफ़ आवरी के बा'द इख़्तिलाफ़ करने लगे कुछ ईमान ले आए और कुछ लोगों ने ह़सद व अ़दावत से कुफ़्र किया। एक क़ौल येह है कि इल्म से कुरआन मुराद है। **199 :** इस त़रह़ कि ऐ सय्यिदे अम्बिया ! आप पर ईमान लाने वालों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और आप का इन्कार करने वालों को जहन्नम में अ़ज़ाब फ़रमाएगा। **200 :** ब वासित़ा अपने रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के **201 :** या'नी उ़लमाए अहले किताब मिस्ले ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब के ताकि वोह तुझ को सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इत्मीनान दिलाएं और आप की ना'त व सिफ़त जो तौरैत में मज़्कूर है वोह सुना कर शक रफ़्अ़ (दूर) करें। **फ़ाएदा :** शक इन्सान के नज़्दीक किसी अम्र में दोनों त़रफ़ों का बराबर होना है ख़्वाह इस त़रह़ हो कि दोनों जानिब बराबर क़रीने पाए जाएं ख़्वाह इस त़रह़ कि किसी त़रफ़ भी कोई क़रीना न हो। मुह़क़्क़िक़ीन के नज़्दीक शक अक़्सामे जह्ल से है और जह्ल व शक में आ़म व ख़ास मुत़्लक़ की निस्बत है कि हर एक शक जह्ल है और हर जह्ल शक नहीं। **202 :** जो बराहीने लाइह़ा व आयाते वाज़ेह़ा से इतना रोशन है कि इस में शक की मजाल नहीं। (خازن) **203 :** या'नी वोह क़ौल उन पर साबित हो चुका जो लौह़े मह़फ़ूज़ में लिख दिया गया है और जिस की मलाएका ने ख़बर दी है कि येह लोग काफ़िर मरेंगे वोह **204 :** और उस वक़्त का ईमान नाफ़ेअ़ नहीं। **205 :** उन बस्तियों में से जिन को हम ने हलाक किया। **206 :** और इख़्लास के साथ तौबा करती अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले। (مدارک) **207 :** क़ौमे यूनुस का वाक़िआ़ येह है कि नैनवा

www.dawateislami.net

الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

जितने हैं सब के सब ईमान ले आते[208] तो क्या तुम लोगों को ज़बर दस्ती करोगे यहां तक कि मुसल्मान हो जाएं[209]

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى

और किसी जान की क़ुदरत नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से[210] और अ़ज़ाब उन पर

الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

डालता है जिन्हें अ़क़्ल नहीं तुम फ़रमाओ देखो[211] आस्मानों और ज़मीन में क्या क्या है[212]

وَمَا تُغْنِى الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ

और आयतें और रसूल उन्हें कुछ नहीं देते जिन के नसीब में ईमान नहीं तो उन्हें काहे का इन्तिज़ार है

اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْا اِنِّىْ مَعَكُمْ

मगर उन्हीं लोगों के से दिनों का जो उन से पहले हो गुज़रे[213] तुम फ़रमाओ तो इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّىْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا

इन्तिज़ार में हूं[214] फिर हम अपने रसूलों और ईमान वालों को नजात देंगे बात येही है हमारे

अ़लाक़ा मौसिल में येह लोग रहते थे और कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला थे। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन की त़रफ़ भेजा आप ने बुत परस्ती छोड़ने और ईमान लाने का उन को हुक्म दिया। उन लोगों ने इन्कार किया, ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की, आप ने उन्हें ब हुक्मे इलाही नुज़ूले अ़ज़ाब की ख़बर दी, उन लोगों ने आपस में कहा कि ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कभी कोई बात ग़लत़ नहीं कही है देखो अगर वोह रात को यहां रहे जब तो कोई अन्देशा नहीं और अगर उन्हों ने रात यहां न गुज़ारी तो समझ लेना चाहिये कि अ़ज़ाब आएगा। शब में ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام वहां से तशरीफ़ ले गए सुब्ह़ को आसारे अ़ज़ाब नुमूदार हो गए, आस्मान पर सियाह हैबत नाक अब्र आया और धूआं कसीर जम्अ़ हुवा, तमाम शह्र पर छा गया, येह देख कर उन्हें यक़ीन हुवा कि अ़ज़ाब आने वाला है तो उन्हों ने ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की जुस्त़जू की और आप को न पाया, अब उन्हें और ज़ियादा अन्देशा हुवा तो वोह मअ़ अपनी औ़रतों बच्चों और जानवरों के जंगल को निकल गए, मोटे कपड़े पहने और तौबा व इस्लाम का इज़्हार किया, शोहर से बीबी और मां से बच्चे जुदा हो गए और सब ने बारगाहे इलाही में गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ की और कहा कि जो यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام लाए उस पर हम ईमान लाए और तौबए सादिक़ा (सच्ची तौबा) की, जो मज़ालिम उन से हुए थे उन को दफ़्अ़ किया, पराए माल वापस किये, ह़त्ता कि अगर एक पथ्थर दूसरे का किसी की बुन्याद में लग गया था तो बुन्याद उखाड़ कर पथ्थर निकाल दिया और वापस कर दिया और अल्लाह तआ़ला से इख़्लास के साथ मग़्फ़िरत की दुआ़एं कीं। परवर्दगारे आ़लम ने उन पर रह़्म किया, दुआ़ क़बूल फ़रमाई अ़ज़ाब उठा दिया गया। यहां येह सुवाल पैदा होता है कि जब नुज़ूले अ़ज़ाब के बा'द फ़िरऔ़न का ईमान और उस की तौबा क़बूल न हुई तो क़ौमे यूनुस की तौबा क़बूल फ़रमाने और अ़ज़ाब उठा देने में क्या ह़िक्मत है? उ़लमा ने इस के कई जवाब दिये हैं: **एक** तो येह करमे ख़ास था क़ौमे ह़ज़रते यूनुस के साथ। **दूसरा** जवाब येह है कि फ़िरऔ़न अ़ज़ाब में मुब्तला होने के बा'द ईमान लाया जब उम्मीदे ज़िन्दगानी ही बाक़ी न रही और क़ौमे यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام से जब अ़ज़ाब क़रीब हुवा तो वोह उस में मुब्तला होने से पहले ईमान ले आए और अल्लाह कुलूब का जानने वाला है, इख़्लास मन्दों के सिद्क़ो इख़्लास का उस को इ़ल्म है। **208:** या'नी ईमान लाना सआ़दते अज़ली पर मौक़ूफ़ है, ईमान वोही लाएंगे जिन के लिये तौफ़ीक़े इलाही मुसाइ़द (मददगार) हो, इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि आप चाहते हैं कि सब ईमान ले आएं और राहे रास्त इख़्तियार करें फिर जो ईमान से महरूम रह जाते हैं उन का आप को ग़म होता है इस का आप को ग़म न होना चाहिये क्यूं कि अज़ल से जो शक़ी है वोह ईमान न लाएगा। **209:** और ईमान में ज़बर दस्ती नहीं हो सकती क्यूं कि ईमान होता है तस्दीक़ व इक़रार से और जब्रो इक्राह (ज़बर दस्ती करने) से तस्दीक़े क़ल्बी ह़ासिल नहीं होती। **210:** उस की मशिय्यत से **211:** दिल की आंखों से और ग़ौर करो कि **212:** जो अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद पर दलालत करता है। **213:** मिस्ल नूह़ व आ़द व समूद वग़ैरा। **214:** तुम्हारी हलाकत और अ़ज़ाब के। रबीअ़ बिन अनस ने कहा कि अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाने के बा'द अगली आयत में येह बयान फ़रमाया कि जब अ़ज़ाब वाक़ेअ़ होता है तो अल्लाह तआ़ला रसूल को और

www.dawateislami.net

عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ع ١٥

ज़िम्मए करम पर हक़ है मुसल्मानों को नजात देना तुम फ़रमाओ ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से

دِيْنِيْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ

किसी शुबे में हो तो मैं तो उसे न पूजूंगा जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[215] हां उस अल्लाह को पूजता हूं

الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ۙ وَاَنْ اَقِمْ

जो तुम्हारी जान निकालेगा[216] और मुझे हुक्म है कि ईमान वालों में होउं और येह कि अपना मुंह

وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ

दीन के लिये सीधा रख सब से अलग हो कर[217] और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना और अल्लाह के सिवा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ

उस की बन्दगी न कर जो न तेरा भला कर सके न बुरा फिर अगर ऐसा करे तो उस वक़्त तू

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ

ज़ालिमों से होगा और अगर तुझे अल्लाह कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उस का कोई टालने वाला नहीं उस के सिवा और अगर तेरा

يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ

भला चाहे तो उस के फ़ज़्ल का रद करने वाला कोई नहीं[218] उसे पहुंचाता है अपने बन्दों में जिसे चाहे

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ

और वोही बख़्शने वाला मेहरबान है तुम फ़रमाओ ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا

से हक़ आया[219] तो जो राह पर आया वोह अपने भले को राह पर आया[220] और जो बहका वोह अपने

يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ ؕ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَ

बुरे को बहका[221] और कुछ मैं तुम पर कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं[222] और उस पर चलो जो तुम पर वह्य होती है और

उन के साथ ईमान लाने वालों को नजात अ़ता फ़रमाता है। **215 :** क्यूं कि वोह मख़्लूक़ है इबादत के लाइक़ नहीं। **216 :** क्यूं कि वोह क़ादिर, मुख़्तार, इलाहे बरहक़ मुस्तहिक़े इबादत है। **217 :** या'नी मुख़्लिस मोमिन रहो **218 :** वोही नफ़्अ़ व ज़रर का मालिक है, तमाम काएनात उसी की मोहताज है, वोही हर चीज़ पर क़ादिर और जूदो करम वाला है, बन्दों को उस की तरफ़ रग़बत और उस का ख़ौफ़ और उसी पर भरोसा और उसी पर ए'तिमाद चाहिये और नफ़्अ़ व ज़रर जो कुछ भी है वोही **219 :** हक़ से यहां क़ुरआन मुराद है या इस्लाम या सय्यिदे आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام। **220 :** क्यूं कि इस का नफ़्अ़ उसी को पहुंचेगा। **221 :** क्यूं कि इस का वबाल उसी पर है। **222 :** कि तुम पर जब्र करूं

www.dawateislami.net

اصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ع ١١ ٦ ١٢

सब्र करो[223] यहां तक कि अल्लाह हुक्म फ़रमाए[224] और वोह सब से बेहतर हुक्म फ़रमाने वाला है[225]

اٰیاتها ١٢٣ | ١١ سُوْرَةُ هُوْدٍ مَّكِّيَّةٌ ٥٢ | رکوعاتها ١٠

सूरए हूद मक्किय्या है, इस में एक सो तेईस आयतें और दस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहम वाला[1]

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ﴿١﴾

येह एक किताब है जिस की आयतें हिक्मत भरी हैं[2] फिर तफ़्सील की गई[3] हिक्मत वाले ख़बरदार की त़रफ़ से

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ﴿٢﴾ وَّاَنِ

कि बन्दगी न करो मगर अल्लाह की बेशक मैं तुम्हारे लिये उस की त़रफ़ से डर और ख़ुशी सुनाने वाला हूं और येह कि

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ

अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो फिर उस की त़रफ़ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरत्ना (फ़ाएदा) देगा[4] एक ठहराए

مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۭ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ

वा'दे तक और हर फ़ज़ीलत वाले को[5] उस का फ़ज़्ल पहुंचाएगा[6] और अगर मुंह फेरो तो मैं तुम पर

223 : कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब और उन की ईज़ा पर 224 : मुश्रिकीन से क़िताल करने और किताबियों से जिज़्या लेने का। 225 : कि उस के हुक्म में ख़त़ा व ग़लत़ का एह़तिमाल नहीं और वोह बन्दों के असरार व मख़्फ़ी ह़ालात सब का जानने वाला है, उस का फ़ैसला दलील व गवाह का मोह़ताज नहीं। 1 : सूरए हूद मक्किय्या है ह़सन व इ़क्रिमा वग़ैरहुम मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आयत "وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ" के सिवा बाक़ी तमाम सूरत मक्किय्या है। मक़ातिल ने कहा कि आयत "فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ" और "اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ" और "اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ" के इलावा तमाम सूरत मक्की है, इस में दस रुकूअ़ और एक सो तेईस आयतें और एक हज़ार छ[6] सो कलिमे और नव हज़ार पांच सो सरसठ ह़र्फ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है : सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हुज़ूर पर पीरी के आसार नुमूदार हो गए। फ़रमाया : मुझे सूरए हूद, सूरए वाक़िआ़, सूरए "عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ" और सूरए "اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ" ने बूढ़ा कर दिया। (ترمذی) ग़ालिबन येह इस वज्ह से फ़रमाया कि इन सूरतों में क़ियामत व बअ़्स व ह़िसाब व जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र है। 2 : जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद हुवा : "تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ"। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि "اُحْكِمَتْ" के मा'ना येह हैं कि इन की नज़्म मोह़कम व उस्तुवार की गई। इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि इस में नक़्स व ख़लल राह नहीं पा सकता वोह बिनाए मोह़कम है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कोई किताब इन की नासिख़ नहीं जैसा कि येह दूसरी किताबों और शरीअ़तों की नासिख़ हैं। 3 : और सूरत सूरत और आयत आयत जुदा जुदा ज़िक्र की गईं या अ़लाह़दा अ़लाह़दा नाज़िल हुईं या अ़क़ाइद व अह़काम व मवाइ़ज़ व क़िसस और ग़ैबी ख़बरें इन में ब तफ़्सील बयान फ़रमाई गईं 4 : उ़म्रे दराज़ और ऐशे वसीअ़ व रिज़्क़े कसीर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि इख़्लास के साथ तौबा व इस्तिग़्फ़ार करना दराज़िये उ़म्र व कशाइशे रिज़्क़ के लिये बेहतर अ़मल है। 5 : जिस ने दुन्या में आ'माले फ़ाज़िला किये हों और उस की त़ाआ़त व ह़सनात ज़ियादा हों 6 : उस को जन्नत में ब क़दरे आ'माल दरजात अ़त़ा फ़रमाएगा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : आयत के मा'ना येह हैं कि जिस ने अल्लाह के लिये अ़मल किया, अल्लाह तआ़ला आयिन्दा के लिये उसे अ़मले नेक व त़ाअ़त की तौफ़ीक़ देता है।

www.dawateislami.net